अंगिका लोकवार्त्ता

डॉ. अमरेन्द्र

अंगिका लोकवार्त्ता

अंगिका लोकवार्त्ता

डॉ. अमरेन्द्र

ISBN : ९७८.८१.९५७१७२.६.२

प्रथम संस्करण
२०२२

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

आवरण-चित्र
कुमार संभव

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ पचास रूपये मात्र

Angika Lokwarta
By Dr.Amrendra Rs.150/-

अपनों धुन कें
जे आय तांय हमरा रुकें नै देलकै–
कलकों बात अलग छै !

–अमरेन्द्र

अंगिका लोकवार्ता : विहंगम दृष्टि

अंगिका लोकगीत आरो अंगिका लोककला पर पैहिलौं हम्में अपनों पुस्तक 'अंगिका लोकसाहित्य और मंजूषा कला' में विचार करी चुकलों छियै आरो यही बहाना अंगप्रदेश के लोकदेवता-लोकदेवी सिनी पर बात होय चुकलों छै, मतर हेनों ढेरे लोकदेव-लोकदेवी के उल्लेख नै हुएँ पारलों छै, जे अंग महाजनपद के विशेष समूह या जाति में काफी लोकप्रिय, पूजनीय छै। कताने देवी, कारू खिरहरी, बाबा सिरपत महाराज आरनी हेने लोकदेव-लोकदेवी छेकै, जैसें संबंधित भले कोय लोकगाथा नै मिलै, लोकगीत तें ढेरे छै। चंद्रप्रकाश जगप्रिय नें एक लोकदेव सें संबंधित एक लघु गाथा प्रकाशितो करलें छै। हेनों संकलन के अभी आरो जरूरत छै। छोटों-छोटों लोकगीतों में उगरी हेनों लोकदेव के उल्लेख मिलै छै।

ई देखतें हुएँ अंगिका के मनौन गीतों के खोजो बहुत जरूरी छै। कभी मिर्जापुर-चंगेरी के लोकगायक नारदी यादव सें हम्में पचीसो मनौन गीत लिखवैलें छेलियै, जे जगप्रिय द्वारा संपादित अंगिका मनौन गीत में संकलित छै, वहू मनौन गीत जे डॉ. विद्या रानी सें हमरा प्राप्त होलों छेलै। हेन्है कें पुनसिये के उचित लाल यादव द्वारा संकलित अंगिका मनौन गीत के अध्ययन सें भी अंग प्रदेश के धार्मिक जीवन के आचार-विचार पर बहुत कुछ विचारलों जावें सकै छें।

अंग प्रदेश के लोकदेव-लोकदेवी कें लैकें हमरों दूसरों पुस्तक में विस्तृत चर्चा होतै, जैमें बिहुला-विषहरी, बहुरा गोढ़िन, मोती दाय, बघेसरी देवी, गढ़ी माई, कलिदास, राजा ढोलन, आल्हा रुदल, नटुआ दयाल, जोति पंजियार, बाबा धर्मदास, नायक बनजरवा, सोनाय महाराज, सोसिया महाजन, सरूप महाराज, सलेस भगत, गोपीचंद, छेछन डोम, घोघन महाराज, उगरी, केवल मल्लाह, बिसुरौत जेन्हों लोकदेवी- लोकदेवताओ के कथा शामिल होतै, जों शरीर आरो मन साथ देलकै। होना कें डॉ. तेजनारायण कुशवाहा आरो अंगिका लोकसाहित्य के विद्वान

जानकार रंजन जी नें अंगिका लोकगाथा सिनी पर विस्तृत प्रकाश डालियो चुकलों है।

जेहनों कि ऊपर में कहलियै कि अंगिका लोकगीत पर विस्तृत चर्चा हम्में अपनों पुस्तक 'अंगिका लोक साहित्य और मंजूषा कला' में करलें छियै आरो वही क्रम में अंगिका के बालगीतों पर, जे अंग प्रदेश में फेकड़ा के नामों सें जानलों जाय छै। फेकड़ा यानी हेनों कुछ अनर्गल गीत, जेकरा में अर्थ के ठीक-ठीक संगति खोजना व्यर्थ हुएँ। मतर कुछ गीत हेनों छै, जे अर्थ के संगति के साथ रचलों गेलों छै आरो विशिष्ट जीवन-दर्शन के साथ—एकरा पर विचार ऊ किताबों में करी चुकलों छियै। एकरों बादो कुछ हेनों बालगीत छै, जे अंग प्रदेश के विविध बाल-खेले कें पंक्तिबद्ध नै करै छै, बलुक ई प्रदेश के लोकसंस्कृति आरो लोकजीवन कें भी बडी सुंदरता सें चित्रित करै छै। श्री ज्योतिष चंद्र शर्मा नें 'अंग धूलिका' में हेनो कै एक फेकड़ा कें संकलित करलें छै, जे ई पुस्तक में भी संकलित छै। एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य छै :

चर-चों, चर-चों, टप्पर गाड़ी
वैमे जोरलो दू-दू पाड़ी
टप्पर आगू लाल पेटारी
टप्पर के चारो दिस साड़ी
गाड़ीवान गाड़ी हाँकै छै
वर-लोकनियाँ ठो दुलकै छै
लाल-लाल कनियाँय हुलकै छै।

आरो सौतारी जीवन पर केन्द्रित एक हेने फेकड़ा छेकै :

सौतारो के एक्के बात
डिग्गा-माँझर बाजै रात
सौतारो के एक्के बात
तीरो-बिज्जर साथे-साथ
सौतारो के एक्के बात
महुआ टपकै राते-रात
सौतारो के एक्के बात
गिदड़ा-गिदड़ी माँड़े-भात
सौतारो के एक्के बात
बाँस-बंसुलिया फूकै रात।
सौतारो के एक्के बात

बँहगी-सीको झूलै साथ
सौतारो के एक्के बात
सौतारिन ठुमकै साथे-साथ।

हेनाकेँ श्री नरेश पाण्डेय चकोर आरो शर्मा जीं जाति-संबंधी कै एक फेकड़ाओ अपनोँ-अपनोँ संग्रह मेँ संकलित करलेँ छै, जेकरा हम्मेँ यहां नै राखलेँ छियै। हों, ऊ खेलगीत पर विचार जरूर होना चाही, जे ऊ जाति के श्रम आरो जीवनशैली केँ उजागर करै छै। यही ख्यालोँ सेँ ई संग्रह मेँ ऊ सब फेकड़ा (बाल-खेलगीत) केँ संकलित करै के कोशिश करलेँ छियै, जेकरोँ मदद सेँ अंग प्रदेश के खेल आरो विभिन्न कला केँ समझलोँ जावेँ सकेँ। हेना केँ ई खेलगीत सेँ जुड़लोँ खेल-प्रकार के उल्लेख हिन्दी मेँ हमरो आवैवाला अगुलका किताब मेँ होतै। यहाँ खाली खेलगीत (फेकड़ा) केँ ही राखी देलेँ छियै, कैन्हे कि ई बालगीत केँ पढ़त्हैं डोल-बगीच्चा, कन्ना गुजगुज, घरघोट, घग्घो रानी, डेंगा-पानी, औका-बौका, अथरो-बथरो, अँखमुन्नोँ, राजा कबड्डी, पिट्टो, अट्ठा-गोठी, बुढ़िया बेंग मछली, पचीसी, बित्ती-बित्ती जेन्होँ खेलोँ के चित्र मस्तिष्क मेँ बनी जाय छै।

बाल-खेल के साथ बहुत कुछ हेनोँ बात जुड़लोँ छै, जेकरोँ दिस आबेँ अंग क्षेत्र के विद्वानोँ के ध्यानो नै जाय छै। जोँन दिन डॉ. मृदुला शुक्ला के संस्मरण-संग्रह 'चिड़ियों के पंख' रोँ लोकार्पण छेलै, वही शाम हुनी हमरा बतैलेँ छेलै कि केना सखी बनाय लेँ हमरा सिनी कोय लड़की केँ कोय फूल भेंट करियै आरो फेनु ओकरा कोय नया नाम देलोँ जाय छेलै।

खेल मेँ किरिया देवोँ तेँ आम बात छेलै आरो किरिया छोड़ाय के भी खेल-मंत्र प्रचलित छेलै। वैमेँ सबसेँ बेसी लोकप्रिय ई छेलै :

गंगा जी मेँ खुट्टा-खुट्टी, बीचोँ मेँ मचान,
हमरा लगेँ नै ई किरिया—सिरी भगवान।

होना केँ किरिया लगवे नै करेँ, एकरो वास्तेँ 'दत्ती' के भी विधान छेलै, जे दाँत पर दाँत जमैला सेँ होय छेलै।

बुझौव्वल भी बालगीत के भीतरे आवै छै, यै लेली हम्मेँ 'अंगिका' पत्रिका मेँ प्रकाशित बुझौव्वले केँ नै, जहाँ-जहाँ सेँ, जेकरा-जेकरा सेँ प्राप्त हुएँ पारलै, यहाँ राखलेँ छियै। बुझौव्वल खाली लोकजीवन के मनोरंजने के चीज नै छेकै, बलुक एकरा मेँ हमरोँ सांस्कृतिक-सामाजिक, धार्मिक जीवनो के झलक होय छै, यहू दृष्टि सेँ अंगिका के बुझौव्वल-बालगीत पर विचारना जरूरी छै।

अंगिका लोककथा आरो लोकनाटक पर तेँ हम्मेँ अपनोँ पैहिलकोँ किताब 'अंगिका लोकसाहित्य आरो मंजूषा कला' मेँ विचार करलेँ छियै, मतर

लोकोक्ति आरो अंगिका शब्द-संपदा पर कभियो विचार नै करै पारलियै, जबें कि अंगिका लोकोक्ति आरो शब्द पर विचार करै के जरूरत शुरुवे सें रहै। विजेता मुदगलपुरी, कृष्ण मुरारी सिंह 'किसान', चंद्रप्रकाश जगप्रिय, सुप्रिया सिंह वीणा नें अंगिका लोकोक्ति कें संकलित करै के दिशा में सराहनीय काम करलें छै, जरूरत छेलै कि संकलित अंगिका लोकोक्ति पर व्यवस्थित ढंग सें विचार होतियै, जों हेनों होतियै तें लोगों कें ई देखी कें हैरत होतियै कि व्यंजना आरो व्यंग्य के दृष्टि सें अंगिका लोकोक्ति कत्तें अचूक छै आरो ई अचूकता के पीछू खाली एकरों सुक्तिये वाला रूप नै छै, अन्त्यानुप्रास केरों रोचक विधानो छै, खास करी कें वहाँ—जहाँ वाक्य कुछ लंबा मिलै छै। कहै छै साहित्य के चौदह रत्नों में संक्षिप्त कथन एक कीमती रत्न छेकै आरो यै दृष्टि सें देखलों जाय तें आन भाषा के लोकोक्ति जना अंगिका लोकोक्तियो अपनों अचूक सामासिक कथन के कारण श्रेष्ठ सुभाषित सें कम नै छै, जैमें अंग महाजनपद के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, वनस्पतिक, यहाँ तक कि पर्यावरण-संबंधी ज्ञान सिमटलों होलों छै आरो तबें एकरों लें यहू जरूरी छै कि लोकोक्ति में ऐलों शब्द के सही-सही अर्थ के ज्ञान सुनवैया कें हुएँ।

अंग प्रदेश वन, पर्वत, नदी, विशाल भू-भाग के क्षेत्र रहलों छै आरो ई क्षेत्र में रहैवाला विभिन्न जाति-प्रजाति के निवासी के व्यवसाय, आवश्यकता आरो संस्कृतियो में बहुत समानता के बादो भिन्नता पैलों जाय छै। यही कारण छै कि अंगिका शब्द अपनों उत्पत्ति-स्थल आरो रूप-परिवर्तन कें लै कें विवेचन के भारी माँग करै छै। अभी तें अंगिका शब्द के कोश-निर्माण भी ठीक सें नै होलों छै। डॉ. डोमन साहु समीर नें अवश्य 'अंगिका-हिन्दी शब्दकोश' तैयार करलें छै, मतर ई जोन विषम परिस्थिति में तैयार होलै आरो सुमन सूरो के पनसोखा, श्रीकेशव के तुलसी मंजरी हेनों दू-चार आरो किताब में ऐलों शब्द के संकलन सें, तें वहाँ बहुत श्रेष्ठ के संभावनाओ नै छेलै। जे हुएँ, समीर जीं एक रास्ता जरूर बनाय देलें छै। एकरा सें पैहिलें बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना सें प्रकाशित 'अंगिका संस्कार गीत' के आखरी में गीत में ऐलों अंगिका शब्द के अर्थ देलों गेलों छै, ऊ भी बहुत महत्वपूर्ण छै। मतर ई दोनो स्रोत सें अंगिका शब्द पावै के जगह लोक के बीच प्रचलित शब्द कें बिछवों जरूरी छै आरो ठेठ अंगिका शब्द के उपासक साहित्यकार के साहित्य के अध्ययन भी, जेकरों सहायता सें 'अंगिका-शब्दमौनी' में हम्में मुट्ठी भर शब्द-संकलित करनें छियै, अंगिका संस्कार गीत आरो अंगिका-हिन्दी-शब्दकोश रों सहायता के बादो। कभियो महाकवि सुमन सूरो नें अंगिका के ठेठ विशेषण के संकलन करना शुरू करलें छेलै, जे 'प्रतिनिधि अंगिका कवि' में प्रकाशित हुनकों

लेखों में ऐलों है। आय खाली अंगिका लोकगाथा, लोककथा, लोकनाटके पर विचार करै के जरूरत नै है, जरूरत है ई भाषा के शब्द संपदा पर भी विचारै के, जेकरा सें अंगिका के लोकसाहित्य के विशाल कोश तैयार होलों है। हेना कें हाल में डॉ. सुजाता कुमारी के 'अंगिका-हिन्दी-शब्दकोश' भी प्रकाश में आवी चुकलों है।

अंगिका लोकगीत में छंद-विधान

अधिकांश विद्वान तें यहा स्वीकार करै है कि लोकगीत में लय तें होय है, मजकि छंद के विधान नै होय है। हम्में हेनों विचार कें मानै लें तैयार नै छियै। लोकगीत में लय है, तें छंद-विधान के कारण ही, आरो यहाँ निश्चित मात्रा आरो 'कल' के विधान भी होय है आरो वहू कि गुरु-लघु के क्रम में। हम्में अंगिका लोकगीत के छंद पर विचार करतें पैलें छियै कि लोकगीत के रचायिता के छंद के शास्त्रीय ज्ञान अवश्य रहें आरो जहाँ तक कुछ लोकगीत में मात्रा आकि कल-संबंधी जे विचलन मिलै है, ओकरों पीछू यहा कारण हुए पारें कि लोकगीत तें ग्रामीण गायक के कंठ में सुरक्षित रहै है आरो हर लोकगायक गायन साथें छंद के प्रति सचेते रहै, हेनों सोचनाहै व्यर्थ होतै, यही सें चरण में लघु के गुरु आरो गुरु के जग्घा पर लघु मात्रा के आवी जैवों कोंन भारी बात छेकै। यैठां यहू बातों पर प्रकाश डाली देना जरूरी होतै कि छंद-विधान में गुरु लघु होय जाय है, खास करी कें कोय शब्द के आखरी गुरु अक्षर तें लघु होइये जाय है, बशर्ते कि ऊ व्यक्तिवाचक संज्ञा नै रहें, होनै कें लघु भी अपनों गतिशीलता के कारण गुरु होय जाय है। जों ई बातो कें ध्यान में राखी कें लोक गीत के छंद पर विचार करलों जैतै, तें केकराहौ आचरज हुए पारें कि लोककवि गीत-रचना के क्रम में चरण आरो मात्रा के प्रति कत्तें सावधान रहलों है। ई अलग बात है कि विषय आरो प्रसंग के आधार पर आरो-आरो लोकभाषा नाँखी अंगिका लोकगीत के नामकरण तें करलों गेलों है, मतर एकरों छंद-विधान पर विधिवत् विचार नै हुएँ पारलों है। छंद के दृष्टि सें अंगिका-लोकगीत पर विचार करै के क्रम में हमरा पहिलकों रास्ता कें तखनी छोड़ै लें पड़लै, जबें हम्में देखलियै कि अंगिका के ढेरे लोकगीत निश्चित गुरु-लघु के 'कल' सें बंधलों होलों छंद छेकै, तें हम्में वहू छंदों पर नया सिरा सें विचार करना शुरू करलियै, जेकरा पर खाली मात्राहै सामना राखी कें विचार करलों गेलों छेलै, 'गण' पर नै आरो नै 'गण' के स्थिति पर। सन् २००३ ई. में अंगिका के लगभग तीस लोकगीतों के वैज्ञानिक ढंगो सें छंद शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करलों गेलै, जैमें कुछ के प्रकाशन 'उत्तरांगी' त्रैमासिक अंगिका पत्रिका के

प्रवेशांक में प्रकाशित होलों छेलै (होना कें वहू में सुधार के जरूरत बचले रहें, तें गलतो नै कहलों जावें पारें)। अंगिका लोकगीत में छंद-विधान कें समझै लेली उत्तरांगी में प्रकाशित ऊ लोकछंद सिनी कें ई पुस्तक के आखिरी में रखलों छियै। यहाँ यहू बताय देना जरूरी छै कि ई लोकछंद के नामकरण अन्यत्र उल्लिखित नै छै। ई नामकरण बहुत कुछ लय के आरोह-अवरोह, आवृत्ति साथें अंग महाजनपद के संस्कृति-स्थल सें सीधा संबंध राखै छै। हेनों यहू लेली करलों गेलों छै कि ई सब लोकगीत के लय पूरे अंग प्रदेश में बहुत लोकप्रिय आरो परिचित लय छेकै।

जहाँ तक लोकगीत में चरण के छोटों-बड़ों होय के बात छै, तें ओकरों संबंध में यहा कहलों जैतै कि आय जे स्वछंद छंद (मुक्त छंद नै) के रिवाज चली चुकलों छै, वहू लोकगीत सें ही आरंभ होलों छै आरो आयकों कवि के स्वछंद छंद के प्रेरणा यहा लोकगीतों के छंद-विधान सें मिललों होतै। होना कें यहा बात सही छेकै कि लोकगीत स्वछंद छंद में नै, पिंगल के निश्चित नियम-उपनियम सें ही बंधलो होलों छै। ई बात कें समझै लेली अंगिका लोकगीत के दू चरण नीचें कलमी छंद में प्रस्तुत छै :

कथी बिनु सुन भेलै आमें रे आमोलिया रे
कथी बिनु सूनें भेलै डारि?
कथी बिनु सुन भेलै बाबा के हवेलिया रे
जाहि बिनु रहलों नै जाय!

ई कवित्त छंद के एक विशिष्ट रूप छेकै, जे अन्यत्र नै पैलों जाय छै। कवित्त में ८, ८, ८, ७ वर्ण पर यति होय छै। ई छंद में ८, ८, ८, २ के विधान तें छै, मतर ७ के जग्घा में खाली २ वर्ण रखलों गेलों छै।

चुटकुला

अंगिका लोककथा पर तें पैहिलो काफी विचार होय चुकलों छै, बात रहलै चुटकला के, तें अंगिका लोकसाहित्य में चुटकलो के कमी नै छै। चुटकुला दरअस्ल कोय घटना पर आधारित हास्य-व्यंग्य के लघु कथा छेकै। ई कथा कभी-कभार हद सें बेसी अश्लील हुऍ पारें। अंगिका के एक साहित्यकार छेकै—खुशीलाल मंजर। हिनकों पास हेनों चुटकुला के कमी नै छै। करीब दू दशक पैहिलें हिनकाहै सें सुनलों तीन चुटकला हमरा अभियो याद छै, जैमें एक तें वहा छेकै, जेकरों उपयोग हम्में अपनों उपन्यास 'सत्ती बोदी' में भी करलें छियै कि केना एक दाफी चार दोस्त गदहा के बच्चे कें पाठा समझी कें बनाय-सुनाय खाय लेलकै। जैमें एक तें पंडित जी के बेटाहै छेलै। फेनु की छेलै, पंडित जी नें ई मंत्र

पढ़लकै—'चार चोर, एक संतोष, गदहा खैलें कुछु नै दोष।' आरो ई किसिम सें गदहा खाय के दोष तुरत खतम होय जाय छै।

दोसरों चुटकुला ई छेकै कि एक आदमी के भाग्य जखनी विधि लिखी रहलों छेलै, तखनिये हुनका कोय काम सें बाहर निकलै लें पड़लै। आरो हुनकी कनियैनीं हँसी-मजाक में ऊ आदमी के भाग्य में ई लिखी देलकै कि यैं कभियो जी भरी खाना नै खावें पारतै। आबें जे लिखाय गेलै—से लिखाय गेलै। ऊ आदमी धरती पर ऐलै, तें खाना रहतौं खावें नै पारें। हर दाफी खाना पर कुछ-न-कुछ भाँगटों लागी जाय। आरो ई काम विधि विधाता के कोय सेवके करावै। एक दाफी ऊ आदमी एक राजा के यहा भोजन करी रहलों छेलै कि दुष्ट सेवक एक फतिंगा बनी कें थाली पर गिरी पड़लै। वै आदमी जानै छेलै कि खाय वक्ती कुछ-न-कुछ गिरवे करतै, से अबकी वैं खाय वक्ती आँख मुनी लेलें छेलै। कौर साथें सेवको ऊ आदमी के पेटों में चल्लो गेलै। जबें ई बातों के पता विधाता कें चललै, तें सरंगों में खलबली मची गेलै। विधाता दौड़लों-दौड़लों ऊ आदमी लुग ऐलै आरो सेवक कें जल्दिये पेटो सें निकाली दै के बात करलकै। चाहें जोंन कारण रहें, ऊ आदमी कें हमेशा कब्जियत के शिकायत रहै छेलै, से वैं कहलकै—केना निकालियौं। पेट साफ होवे नै करै छै। जों कब्जियत के शिकायत हमेशे वास्ते दूर करी दा, तें तोरों सेवक पेटों के नीचें सें निकलें पारे छै, मतर तोरा ई गच्छै लें लागतौं कि फेनु कभियो हमरों पत्ता पर कुछ नै गिरें। कोय उपाय नै देखी कें विधातां दोनो शर्त्त मंजूर करी लेलकै, तें वै आदमीं विधाता के सेवक कें कोत्थी-कात्थी बाहर निकाली देलकै।

लोकपर्व

(१) विसुआ (२) घाटो घटेसर (३) मनसापूजा (४) छठपूजा (५) सामा-चकेवा (६) जितिया आरनी। यैठां यहू बताय देना जरूरी छै—अंगप्रदेश में बसलों कै एक जातियो के अपनों-अपनों विशिष्ट पर्व छै, जे ऊ वर्ग के लोकदेव-लोकदेवी आकि कोय मान्यता सें जुड़लों होलों पर्व छेकै। ढेर हेनों लोकपर्व प्रचलित छै, जे उत्तर भारतों में कोय-न-कोय रूपों में प्रचलित छै—तीज, करवाचौथ, वट-सावित्री हेने लोकपर्व छेकै। ई लोकपर्वो सें जुड़लों लोकगीत अंग के विस्तृत भूगोल में बिखरलों होलों छै। कोय शक नै कि लोकपर्व सें जुड़लों गीतों के तें संकलन होलों छै, मतर यहाँकरों लोकपर्वों पर विस्तार सें विवेचन करै के जरूरत छै। कुछ हेनों पर्व छै जे सीधे आदिवासी मान्यता और परम्परा सें जुड़लों होलों छै। करमा-धरमा, मालगुडुवे हेने आदिवासी पर्व छेकै, जे अंग प्रदेश के संथाल परगना

साथें बौंसी (बाँका) सें सटलों अंचल में प्रमुखता सें मनैलों जाय छै।

लोकनृत्य

आदिवासी लोकपर्व के साथ जे लोकनृत्य जुड़लों होलों छै, ऊ तें अइयो सुरक्षित छै, मतुर आरो-आरो लोकनृत्य तें जेना शेषे होय गेलों छै। यैठां ई बताय देना जरूरिये होतै कि अधिकांश अंगिका लोकनृत्य चूंकि लोकनाटक सें जुड़लों होलों छेलै, यही कारण छै कि लोकनाटक के मंचन बिखरी गेला के कारण लोकनृत्य भी समाप्ति के कगार पर छै। आबें नै तें भर्तृहरी के चर्चा उठै छै, नै तें नौटंकी आरो कीर्तनियां के। 'जट-जटिन' के नृत्य करैवाला ही कहीं हेराय गेलों छै। यहाँ तक कि बीहा-शादी में जे लौंडाडांस होय छेलै, वहू नै। भाँड-भाँडिन के नृत्य जे कभियो बड्डी आम बात छेलै, वहू अपनों बिस्तर समेटी चुकलों छै, एकरों नतीजा ई होलों छै कि एकरों साथ ढेरे-ढेर लोकगीतों के मृत्यु होय चुकलों छै।

अंग प्रदेश रों आभूषण-अलंकार

गोदना तें अंग प्रदेश के पारंपरिक अलंकार में बेहद लोकप्रिय रहलों छै, जे अभियो नया रूप धरी समाज में प्रचलित छै। गोदना सें जुड़लों गीत के लोकप्रियतै बताय छै कि गोदना के, विशेष करी कें स्त्री-समाज के बीच, की लोकप्रियता आरो महत्व रहलों छै।

गोदना के अतिरिक्त देह पर चाँदी-सोना के आभूषण धारण करै के रिवाज दू-तीन दशक पूर्व खूब रहलों छै। समाज में लूट-पाट के कारणो ई प्रचलन में बहुत कमी आवी गेलों छै, मतर लोकगीत के अतिरिक्त कथागीत में जे आभूषण सिनी के खूब उल्लेख होलों छै, जेकरों सिलसिलेबार उल्लेख अंगिका रों लोकप्रिय कवयित्री सांत्वना साह नें अपनों काव्यपुस्तक 'बिसुआ-फगुआ' में भी करनें छै, ऊ हेना कें छै :

खोपा रों आभूषण—एक काँटी पनमा, दू काँटी छोटका, छोटों-छोटों मछरी आरो सिकरी लड़ी।

नाक के आभूषण—बेसर, बुलकी, नथ

कानों रों आभूषण—माकड़ी, सोनो, कनौसी, मछरिया, करनफूल, भुमका।

गला के आभूषण—हौंसली हेकल, जवाड़ी, जोगनी, चंद्रहार, चकती चंपाकली, मटरमाला आरो किसनचूरा

बाँह रों आभूषण— बाँक, बाजू जौसन, बिजौठा आरो किसनचूरा।

हाथ के आभूषण— कंगनी, कंगना, पौंची, लौगरी, पिछुआ आरो पात।

कमर सें जुड़लों आभूषण—कोचमन, कमरगोट, डरकस।

गोड़ सें संबंधित आभूषण—काड़ा, छाड़ा, पाजेब, चौरासी, बिछिया आरो पैरी जों अइयो ई शृंगार दिखाय पड़ी जाय छै, तें बीहा-शाादी में।

स्वास्थ्य आरो चिकित्सा-विधि

अंगिका लोकगीत आरो लोकजीवन में गाछ-बिरिछ कें एत्तें महत्व कैन्हें देलों गेलों छै—यै लेली कि एकरों औषधीय महत्व नै खाली वैद्य आरनी कें मालूम छेलै, बलुक जनसामान्य कें भी। यही कारण छै कि यहाँ रीति-रिवाजे में ही हल्दी, गोटों, घास, आम, पीपल, नीम आरनी कें धार्मिक कार्यों में महत्व देलों जाय छै। नाड़ी-विज्ञान के तें यहाँकरों चिकित्सा-पद्धिति में हाल-तांय विशेष स्थान रहलों छै, जेकरों लुप्त होय जैवों अंगप्रदेश के स्वास्थ्य लेली बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध होलों छै। नाड़ी-विज्ञान नाँखी यहाँकरों जीवन में तंत्र-मंत्र, झाड़-फूँक सें जे चिकित्सा चलै छेलै, वहू शेष होय रहलों छै। है कहना कि झाड़-फूँक एकदम व्यर्थ के चिकित्सा-पद्धिति छेलै, गलत होतै। वहाँ भी जड़ी-विज्ञान ही काम करै छेलै, मंत्र तें ऊ ज्ञान पर एक आवरण नाँखी छेकै। नीचें भूत-प्रेत झाड़ै के एक मंत्र प्रस्तुत छै :

जहर माई देवौ दक्खिवाली
भवानी देवी, गाँव कें देवौ
जोंल बान्हौं, जल के काया बान्हौं
भूत बान्हौं, परेत बान्हौं
ओझा बान्हौं, वान बान्हौं
हनुमान जी के पहरा।

कभियो ज्योतिष चंद्र शर्मा नें हमरा कैएक अंगिका फेंकड़ा के बारे में बतैलें छेलै कि ई फेंकड़ा नै, मंत्र छेकै—जे रोग आरो व्याधि के उपचार में ई पढ़लों जाय छै । कभियो अंग प्रदेश में ई मंत्र के समाज पर भारी प्रभाव छेलै । कभियो की, ऊ तें अइयो छै । इतिहासकार राजेन्द्र प्रसाद सिंह नें दक्षिणी अंग (वर्त्तमान में पलामू जिला) के हैदरनगर में लगैवाला भूत-प्रेत के मेला के संबंध में विस्तार सें लिखलें छै कि केना हैदरनगर में अभियो चैती नवरात्रा पर भूत के मेला लगै छै, जे पहली पूजा सें लैकें नौमी पूजा तांय चलै छै। आरो जे मेला में झारखंड, बिहार, बंगाल उड़ीसा के अतिरिक्त छत्तीस गढ़ के भी तांत्रिक, साधु, फकीर पहुँचै छै आरो नौ रोजो तांय हवन के साथ किसिम-किसिम के मंत्रोच्चार होतें रहै छै । फेनु लोगों के भीड़ होने, जे लोग शारीरिक आरो मानसिक व्याधि सें मुक्ति पावै लें वहाँ पहुँचै छै ।

इतिहासकार नें ई जानकारी अठारह मई बीस सौ बाइस के फेसबुको पर

राखलें छेलै ।

कला रों विभिन्न रूप के केन्द्र : अंगमहाजनपद

अंग प्रदेश में नृत्य आरो संगीत अति प्राचीन काल सें चरम पर रहलों छै, ई बात कें हम्में 'ऋषिशृंग' के ऊ प्रसंग सें भी समझें पारै छी, जबें चम्पा के नर्त्तकी सिनी अपनों संगीत-नृत्य, रूप-सज्जा सें ऋषिपुत्र कें बान्ही ऋषिकुंड सें चंपा लै आनलें छेलै।

ई प्रसंग सें यहू पता लगै छै—यै ठां विभिन्न प्रकार के सुरा तैयार करै के विधियो प्रचलित छेलै, जेकरों पानो निसिद्ध नै छेलै। नृत्य-संगीत के एक्के उदाहरण नै मिलै छै। 'वसुदेव हिण्डी' ग्रंथों में हेनों कैएक कहानी ऐलों छै।

यहा वसुदेव हिण्डी ग्रंथ सें यहू पता चलै छै कि तखनी कमल के पत्ता पर चित्रकारी के अपूर्व लोककला चंपा में विकसित छेलै। एकरों कारण छेलै कि तखनी अंग प्रदेश में झील-सरोवर के कमी नै छेलै। झील-सरोवर के बहुतायत के कारणे जों यहाँ तैराकी एक प्रमुख कला के रूप में लोकप्रिय छेलै। ई बात कें हम्में अंगिका लोककथा सें भी समझें पारौं।

ई संबंध में हमरा हमेशे याद रखना चाही कि अंग प्रदेश बड़ों-बड़ों नदी, सरोवर, पहाड़ आरो जंगलों सें भरलों होलों देश-महाजनपद रहलै, जे अभियो खतम नै होलों छै, मतुर तखनी यहा नदी आरो जंगल जलचर, वनचर प्राणी सें भरलों होलों छेलै, जेकरों शिकार करवों, आकि हाथी कें सवारी बनैवों अंगवासी के मनोरंजन के प्रमुख साधनो छेलै। जंगली पशु कें तीर सें शिकार करवों आरो यहा कारण तीर-धनुष के साथें नाव के निर्माण यहाँकरों प्रमुख कला में शामिल छेलै।

मंजूषा कला तें अति प्राचीन काल सें ही अंग प्रदेश में लोकप्रिय रहलों छै, एकरों अतिरिक्त जेठोन, कोहवर के मौका पर बनैवाला चित्र लोककला के सुन्दर उदाहरण छेकै। सान्त्वना साह के काव्य 'बिसुआ-फगुआ' के आवरण पर एक हेने चित्र अंकितो छै।

यहू तें अलग सें विचार करै के विषय छेकै कि चंपा में केना चंपई रंग के विकास होलै, आरो वही रंग में रंगलों रेशमी वसन केना सौंसे देश पहुंचै गेलै। उदय शंकर नें यै विषय पर एकटा सुंदर जानकारी देलें होलों छै, जे बड्डी महत्व के छेकै।

प्रकृति के वरदान सें परिपूर्ण अंगप्रदेश के निवासी देह-हाथ सें भी कम बलिष्ठ नै छेलै, यही सें कुश्ती यहाँकरों प्रमुख खेल रहै, विभिन्न दाव-पेंच के कला

हाल तांय अंगप्रदेश में प्रचलित छेलै, जे आबें शेष होय चललों छै। अंगप्रदेश के लोककला पर बात चलत्हैं यहाँकरों मूर्तिकला पर भी बात उठी जैवों एकदम स्वाभाविके छै। एक तरफ जहाँ शृंगार वास्तें केश-विन्यास कें विभिन्न रूप देलों जाय रहलों छेलै, वही माँटी के पकैलों खिलौनाहो काफी लोकप्रिय छेलै। एक दाफी अंग लोककला के प्रमुख जानकार ज्योतिष शर्मा नें हमरा बतैलें छेलै कि बुद्धकाल में ताड़-पत्ता सें घूमैवाला खिलौना साथें आदमियो के खिलौना बनै छेलै, जैमें ताड़ के पत्ते सें दोनो हाथ आरो देह बनैलों जाय। शर्मा जी नें अपनों पुस्तिका 'अंग धूलिका' में हेनो कै एक फेफड़ा संकलित करलें छै, जेकरा सें पता चलै छै कि कठपुतली लोककला अंग प्रदेश में प्राचीन काल में भी विद्यमान छेलै।

'अंगिका लोकवार्त्ता' अपना-आप में पूर्ण नै छै, एकदम आधों-अधूरा। एकरों कारण तें हम्में ऊपरे में कही चुकलों छियै। ई किताब तें खाली छुटलों अंश कें सुची भर एक ठियां इकट्ठा करै के प्रयास छै। जबें दोसरों किताब प्रकाशित होतै, तें 'अंगिका लोकवार्त्ता' के छुटलों अंश वैमें प्राप्त होतै। जैमें अंगिका लोकगीतों में प्रकृति आरो पर्यावरण के भी चर्चा समाहित होतै। अंग प्रदेश में संस्कार के जे भी कर्म होय छै, वैमें गाछ-विरिछ, माँटी, नद्दी के पूजन तें शामिल रहवे करै छै, यही ई सिद्ध करै छै अंग प्रदेश अपनों प्रकृति आरो पर्यावरण के प्रति कर्त्तें सजग रहलों छै। सोहर, मुंडन, तिलक, लगन, चुमावन, मटकोर, मँड़वा, आमबीहा, नहछू, इमली घोटाई, बिलोकी, अठोंगर, दान, कोहबर, पचीसी, समदन, गौना आरनी पर संक्षिप्ते में सही—चर्चा नै करें पारलियै। जे जरूरी छेलै, कैन्हें कि यहा सबके बीचों सें अंग प्रदेश के रीति-रिवाज, परम्परा, विश्वास आरनी खुलै छै। यैमें जे कुछु लोकगीत छै, ऊ हमरा डॉ. आभा पूर्वे सें मिललों छै, जे विषय कें स्पष्ट करै में सक्षम छै, हेनों नै कहलों जावें सकै छै। जे हुएँ, इखनी तें एतन्है टा सें हमरा आरो आपन्हौ सिनी कें संतोख करै लें लागें!

—अमरेन्द्र

श्रीकृष्ण जनमाष्टमी,
१६ अगस्त २०२२ ई.

सम्पर्क : लाल खां दरगाह लेन,
सराय, भागलपुर, बिहार-८१२००२
मो. - ९९३९४५१३२३, ८३४०६५०६७९

विषय-क्रम :

- अंगिका लोकगीत / १९
- अंगिका लोकगाथा / ३३
- अंगिका फेकड़ा / ४५
- अंगिका बुझौव्वल / ६२
- अंगिका शब्द मौनी / ६८
- अंगिका लोकोक्ति / ७८
- अंगिका लोकछंद / ८८

अंगिका लोकगीत

छठ गीत

गीत-१

काँचहि बांस केरॉ गहबर
आहे सोबरन लागल केबाड़
ताहिमें सें निकलै सुरुजमनि
आहे कोने दाइ उखम डोलाय
अरध के बेर भेलै हे
भिनसर के पहर में डोमिन बेटी हे
बेटी धनी दउरिया लेॅ आव
अरध के बेर भेलै हे
बेटी पियरे कनसुपती ले आव
पुरुष रंथी ठाड़ भेलै हे
भिनसर के पहर में बनिआइम बेटी हे
बेटी धनी सुपारी लै आव
अरध के बेर भेलै हे
भिनसर के पहर में तोहें मालिन बेटी हे
बेटी धनी सतरंगा फूल-हार लै आव
अरध के बेर भेलै हे
भिनसर के पहर में तोहें ब्राह्मण देव हे
ब्राह्मण पियरे रंग जनउआ लै आव अरध के बेर भेलै हे ।

गीत-२

हमरौ पर होइऔ सहाय, हे छटि मइया
हमरौ पर होइऔ सहाय
चारि पहर राति जल-थल सेबलौं
सेबलौं छटि गोरथारि, हे छटि मइया
हमरौ पर होइऔ सहाय
अपना लेॅ मंगलौं अन धन-लक्ष्मी
जुग-जुग माँगल अहिबात, हे छटि मइया
हमरौ पर होइऔ सहाय

घोड़ा चढ़ै लेली बेटा एक मांगलौं
माँगल घर में पुतोहू, हे छटि मइया
हमरौ पर होइऔ सहाय
बैनों बिलहै लेली बेटी एक मांगलौं
माँगल पंडित जमाय हे छटि मइया
हमरौ पर होइऔ सहाय ।

संस्कार गीत

सोहर

गीत-१

धन्य धन्य राज अयोध्या कि धन्य राजा दशरथ हे
ललना रे, धन्य रे कौशिल्या जी के भाग कि रामजी
जनम लेल हे
ऐला जे पंडित पुरहित बैठला पलंग चढ़ी हे
ललना रे गुनि दियौ नुनुआ के दिन कि कोन तिथि
जनमल हे
नवमी तिथि नुनुआ जनम लेल चैत मास बीतै हे
ललना रे बारहे बरष जब होयतै वनहि चलि जायत हे
एतना वचन जब सुनलनि अहो राजा दशरथ हे
ललना रे धरती खसल मुरूछाइ कि अब केना जीवत हे
सोइरी सें बोललली कौशल्या रानी सुनु राजा दशरथ हे
ललना रे, कहीं जिए मोरा बेटा बांझी पन छूटल हे

गीत-२

भोर भेलै पोह फाटल,
चिरैया एक बोलै हे ।
राजा, छोड़ी देहो हमरो अँचबा,
सरमियाँ हमरो लागत हे ।।
किए तोरा सासु जगाबै,
ननदी बोल बोलै हे ।
धनि, किए तोरा गोद में बलकबा,
कि गोद लेके बैठब हे ।।

नहिं मोरा सासु जगाबै,
ननद बोल बोलै हे ।
पियबा, नहिं मोरा गोदी बलकबा,
कि गोद लेके बैठब हे ।।
घर पिछुअड़बा में बिपर,
त बिपर के बोलाएल हे ।
बिपर, सगु के पोथिया उलटाय देहो,
संतति कहिया होएत हे ।।
पुरूब के चाँन पछिम् होइत हे ।
रानी, संतति के मुँह नहीं देखब,
संतति तोरा नहीं होएत हे ।।
खोंयछा भरि लेलिऐ तिलचौरी,
त अदित मनाबली, सुरूज मनाबली हे ।
ये अदित, हमरा पर होबहो दयाल,
संतति कहिया होएत हे ।।
एक बोली मारै सासु मोरा,
दोसरा ननद मारै हे ।
अदित, तेसर बोली मारै पुरूखबा,
सहलो नहीं जाइछै हे ।।
नव महिनमा जब बितलै,
कान्ह अवतार लेलकै हे ।
रामा, बाजे लागल आनन्द बधावा,
महल उठै सोहर हे ।।
घर पिछुअड़वा में बिपर,
त बेगि चलि आबहु हे ।
बिपर, तोहर बोलिया सालै छै करेजबा,
त गोड़ तोरा कैसे क लागि हे ।।

गीत-३

पिया हे, सपना सपनैलें झुनझुनमा मोहि आनि देहो हे ।
धनि रे, नै देखैं लड़का अबोधबा,
झुनझुनमा कौने खेलत हे ।।
घर पछुअड़बा में बसै नौआ भैया,

तोहिं मोरा सहोदर भैया हे ।
जाहो नौआ हमरो नइहरबा,
लोचन पहुँचाबहु हे ।।
एक कोस गेल नौआ,
दुई कोस, आरो दोसर कोस हे ।
तेसर कोस बाबा के नगरिया,
महलिया सोहर गाबै हे ।।
कहाँ के तहुँ नौआ छिका,
कौने बाबू पठाएल हे ।
किनका क भेलेन होरिलबा,
लोचन पहुँचाएल हे ।।
मथुरा के हम नौआ छिकें,
बाबू साहिब पठाओल हे ।
हुनका घर भेलेन होरिलबा,
लोचन जहुँचाएल हे ।।
अँगना बोहारैत तोंहे चेरिया,
त औरो चेरिया छिअ हे ।
देखे गे नैहरबा बाट,
सहोदर भैया आबै हे ।।
आगु रे आबै सहोदर भैया,
पाछु त पिअरी साड़ी हे ।
तहिं पाछु आबै भार सार,
महल उठै सोहर हे ।।
मचिया बैठलि तहुँ सासु,
त हमरो गोसावनि हे ।
कहँमा में राखब सहोदर भैया,
कहँमा में पिअरी साड़ी हे ।
अँचरे बैठाबिहों सहोदर भैया,
सिरा आगु पिअरी साड़ हे ।।

जनेऊ

गीत-१

आँगन निपल गहागही,
माड़ब छाओल हे ।
मचिया बैठली तोहिं रानी हे,
मोरी ठकुरायनी, मोरी चधुरायनी हे ।
आबै बाबा के दुलारी,
गरब जनि बोलब हे ।।
आबह हे ननदो आबह,
बैठहो पलँग चढ़ि हे,
बैठहो मचिया चढ़ि हे ।
गाबह दुइ चार गीत,
कि गाबि सुनाबह हे ।।
गायब हे भौजी गायब,
गाबि सुनायब हे ।
हमरा कें किए देभों दान,
हलसि घर जायब हे ।।
हमरा कें दिहों भौजो चुनरी,
बालक गले हाँसुलि हे ।
परभुजी कें चढ़न के घोड़बा,
हलसि घर जायब हे ।।

गीत-२

आजु माड़ब मोर सोभित भेल हे ।
सोने के खम्हा में हीरा जड़ायल,
मोतियन के गुच्छा लटकायल हे ।
सोने के चौकी चढ़ि बैठल से दादा हो,
बरुआ सब माँगै जनेऊ हे ।।
मूँज के जनेउआ गिराय देहो हे,
पियरी जनेउआ पिन्ही लेहो हे ।
मिरगा के छाला गिराय देहो हे,
पिन्ही लेहो पियरी पीतम्बर हे ।।
परास कै डंडा गिराय देहो हे,

धै लेहो सोने मूठ छड़िया हे ।
आजु माड़ब मोर साभित भेल हे ।।

विवाह गीत

गीत-१

हरियर दूबियो बछरबो नै चरै गे माई
हमरो सुन्दर दुल्हा मोरियो नै पिन्है गे माई
मलिया के जनमल सब्भे बहनोइया गे माई
सह बहनोइया बाबू क मोरिया पिन्हाव गे माई
दरजी के जनमल सब्भे बहनोइया गे माई
सह बहनोइया बाबू कें जुड़वा पिन्हाव गे माई
सोनरा के जनमल सब्भे बहनोइया गे माई
सहें बहनोइया बाबू कें सोनमा पिन्हाव गे माई
चमरा के जनमल सब्भे बहनोइया गे माई
सहें बहनोइया बाबू कें जुतुवो पिन्हाव गे माई ।

गीत-२

सब सखियन मिली चलली पोखरिया हे,
सुहावन लागै
जनक लाडली संग सोहाय हे
सुहावन लागै
मंगल के कलसा लेलें, तेल आ अँकुरिया हे,
सुहावन लागै
मंगल बाजन बधाय हे, सुहावन लागै
मंगल के गीत गावे अति मन-हरखित हे
सुहावन लागै
सुनी कल कंठ लजाय हे,
सुहावन लागै
आनन्द बधावा बाजै बड़ अनमोलिया हे,
सुहावन लागै
देव मिलि फूल बरसाय हे,
सुहावन लागै
फूलमन्ती हाथ लेलें, मणि के कोदरिया हे,

सुहावन लागै
मटिया कोड़न चली जाय, हे सुहावन लागै।

गीत-३

चलु देखन राजकुमार, आनन्द आज मिथिला में
घोड़वा नचैने आवै, छैला अलबेलवा
मुख पर धरनें रूमाल, आनन्द आज मिथिला में
झुण्ड के झुण्ड आवै, हाथी, घोड़ा, घोड़िया
लै कें खरखरिया कहार, आनन्द आज मिथिला में
रोशनी सें राति लागै, दिनो दुपहरिया
तीनो भुवन उजियार, आनन्द आज मिथिला में
दूर के नगरिया सें ऐलन बरियतिया
लगि गेलन मिथिला-दुआर, आनन्द आज मिथिला में
सब सखि हिली-मिली, चललै सजी कें सब
देखन राजकुमार, आनन्द आज मिथिला में

गीत-४

गंगा बही गेल जमुना गे बेटी,
सुरसरि बहै नीर धार हे
हाँ हे, ताही बीच बाबा धिया-संकल्प लै
काँपल कुसवा के तार हे
अच्छत काँपल, चन्दन काँपल, काँपल कुल परिवार हे
हाँ हे, धिया लेनें काँपल बेटी के बाबा
केना पत रहितै हमार हे
कौनें पत राखत देवी दुर्गा, कौनें पत राखत भागवान हे
हाँ हे, मोर पत राखतै भइया सभे भइया
जीनी भइया दाहिनी बाँह हे
कौन ग्रहण बेटी सांझ ही सें लागलै
कौन ग्रहन भिनसार हे
हाँ हे, कौन ग्रहण बेटी मड़वा में लागलै
कब तक होएतै उबार हे
चन्द्रग्रहण बाबा सांझ ही सें लागलै, सुर्यग्रहण भिनसार हे
हाँ हे, कन्याग्रहण बाबा मड़वा में लागलै
धरम सें होइहैं बेड़ा पार हे

कौन ग्रहण बेटी आज की रतिया
कब संग होएतै उबार हे
हाँ हे, धिया ग्रहण अम्मा आज की रतिया
ईश्वर लगैहियैं बेड़ा पार हे

गीत-५

बड़ी रे यतन सें लिखल सासु कोहवर
ताहि कोहवर सुतलन्हि कौन दुलहा
जौर सुतें गेलन दुलहिन सुकुमारी
मुँहमा उधारी जब स्वामी जी देखलन्हि
कौन अभरन धानी हे, मैया देलखिन
कौन अभरन धानी हे, बाबा देलखिन
कौने अभरन धानी हे, भैया देलखिन
कौने अभरन धानी हे, भौंजो देलखिन
कौने अभरन धानी हे, स्वामी देलखिन ?

पोंती हे पेटरिया प्रभुजी मैया देलखिन
गैया आ महिसिया प्रभुजी बाबा देलखिन
लौंग आ इलायची प्रभुजी भैया देलखिन
खोंइछा दुबी धान प्रभुजी भौजो देलखिन
सिर में सिनुर प्रभुजी आपन्हैं देलखिन
माय-बाप-राज प्रभु हे छुड़ाए देलखिन
सखि आ बहिनियाँ प्रभु हे छुड़ाए देलखिन ।

गीत-६

बड़ी रे जतन सें हम सियाजी के पोसलौं
से हो रघुवंशी लेनें जाय छै हे सखिया
रानी जे रोवै छै रामा रोबै रनिबसवा से
राजा जे रोवै छै दरबजवा हे सखिया
हाथी जे रोवै छै रामा रोबै हथिसरवा से
घोड़ा जे रोवै छै घोड़सरवा हे सखिया
टोला आ परोसा मिली खूबे सब कानलै से
रोवै छै नगरिया के लोग आहे सखिया
ऐंगना के चन्दन तुलसी गाछ कानलै से

कानै छै नगरिया के लोग आहे सखिया
मिलि लिओं मिलि लिओं संग के सहेलिया से
सिया सखी जैथिन ससुरारि आ हे सखिया
कोय साटै आहे रामा पौंती आ पेटरिया से
कोय हांकै धेनु-गाय सब आहे सखिया
कोय साठै रामा आहे लौंग हे इलैंचिया से
कोय दै छै दुभी धान सुनू आ हे सखिया
मैया साठै आहे रामा पौंती आ पेटरिया
बाबा हांकै धेनु-गाय सुनू आहे सखिया
भैया साठै रामा आहे लौंग हे इलैंचिया से
भौजी दै छै मिली दुभी-धान आहे सखिया
कौनें जे कहै—बेटी नित ही बोलायब से
कौनें जे कहै—छबे मास हे, सखिया
कौनें जे कहै—बेटी जग रे परोजन से
कौनें जे कहै—दुर जाऊ आ हे, सखिया
मैया कहै—बेटी नित ही बोलायब से
बाबा कहै—छबे मास सुनू आ हे, सखिया
भैया कहै—बेटी जग रे परोजन से
भौजी कहै—दुर जाऊ जाऊ आ हे, सखिया ।

गीत-७

रामचन्द्र दुलहा सुहावन लागै
अति मन भावन लागै हे
माई हे ना जानौं कोशिला के कोखी गुन
कि रामचन्द्र रूपे गुन हे
माथे मनी मौरीया सुहावन लागै
अति मन भावन लागै हे
माई हे ना जानौ मलिनी के बनवै गुन
कि रामचन्द्र माथे गुन हे
दुलहा के कण्ठ सुहावन लागै
अति मन भावन लागै हे
माई हे ना जानौ सोनरा के गढ़ै गुन
की रामचन्द्र कण्ठे गुन हे

अंग में जोड़वा सुहावन लागै
अति मन भावन लागै हे
माई हे ना जानौ दरजी के बनवै गुन
कि रामचन्द्र अंगे गुन हे
चन्दन दुलहा के सुहावन लागै
अति मन भावन लागै हे
माई हे ना जानौ पुरहैतजी के हाथे गुन
कि रामजी के माथे गुन हे

गीत-८

बड़ी रे जतन सें हम सीया जी के पोसलौं
सेहो रघुवंशी नेनें जाय
जौं हम जनितहुँ सीता जैती ससुरारि
रोपतिहुँ गुअवा के गाछ
छाहरि छाहरि सीता जैंती ससुरारि
लगतन्हि सीतल बसात
माथा उधारि धीया दसो दिशि हेरल
छूटि गेल बाबा केरॉ राज
चार कहरिया पंचम लोकनिया
छठमॉ सहोदर भाइ
घुरू-घुरू भैया धूरी घर जाअहो
हकन करती होइथि माय
अम्मा कानतें-कानतें पत्थल भै जैती
हमहुँ बैसब हिया हारी ।

गीत-९

दुल्हा रे, के तोरा मौरिया रे सँवारल,
मौरिया रे सँवारल,
मौरिया रे अजब रंग, मौरिया रे सबज रंग,
मौरिया मोरा मन बसै हे
सासु हे, मलियबा के बेटबा रे यार छल,
मैया लगवार छल, दादी के भतार छल,
वहे मोरा मौरिया रे सँवारल, मौरिया रे सँवारल,
मौरिया रे अजब रंग, मौरिया रे सबज रंग,

मौरिया मोरा मन बसै हे
दुल्हा रे, के तोरा कुण्डल रे सँवारल,
कुण्डल रे सँवारल,
कुण्डल रे अजब रंग, कुण्डल रे सबज रंग,
कुण्डल मोरा मन बसै हे
सासु हे, सोनरबा के बेटवा जे यार छल,
नानी के लगवार छल, मामी के भतार छल,
वहे मोरा कुण्डल रे सँवारल, कुण्डल रे सँवारल,
कुण्डल रे अजब रंग, कुण्डल रे सबज रंग,
कुण्डल मोरा मन बसै हे
दुल्हा रे, के तोरा तिलक रे सँवारल,
तिलक रे सँवारल
तिलक रे अजब रंग, तिलक रे सबज रंग,
तिलक मोरा मन बसै हे
सासु हे, पण्डितजी के बेटवा जे यार छल,
पड़ोसिन लगवार छल, काकी के भतार छल,
वहे मोरा तिलक रे सँवारल, तिलक रे सँवारल,
तिलक रे अजब रंग, तिलक रे सबज रंग,
तिलक मोरा मन बसै हे
दुल्हा रे, के तोरा जोड़वा रे सँवारल,
जोड़वा रे सँवारल,
जोड़वा रे अजब रंग, जोड़वा रे सबज रंग,
जोड़वा मोरा मन बसै हे
सासु हे, दरजीयवा के बेटवा जे यार छल,
फुआ लगवार छल, मौसी के भतार छल,
वहे मोरा जोड़वा रे सँवारल, जोड़वा रे सँवारल,
जोड़वा रे अजब रंग, जोड़वा रे सबज रंग,
जोड़वा मोरा मन बसै हे
दुल्हा रे, के तोरा जूतवा रे सँवारल,
जूतवा रे सँवारल,
जूतवा रे अजब रंग, जूतवा रे सबज रंग,
जूतवा मोरा मन बसै हे

सासु हे, चमरवा के बेटवा जे यार छल,
भौजी लगवार छल, दीदी के भतार छल,
वहे मोरा जूतवा रे सँवारल, जूतवा रे सँवारल,
जूतवा रे अजब रंग, जूतवा रे सबज रंग,
जूतवा मोरा मन बसै हे ।।

महाप्रयाण गीत

वन सें लकड़ी बीनि कें आबें चिता जराय दीन
कोखिया के जनमल भेल मुदइया मुखवा में अगिया दीन ।
चलहीं के बेरिया गुरु के अरजिया करू हे सखिया
नैहरा के सुधि आबें बिसराएल हे सखिया ।
किये कैले दान-पुन किये कैले भगतिया
कियें तुहूँ साधु-संत के जिमाएल हे सखिया ।
नाही कैलौं दान-पुन नाही कैलौं भगतिया
नहीं हम साधु-संत के जिमाएल हे सखिया ।
बाबा-भैया देलकै अहो रामा कान दूनो सोनमा
चलही के बेरिया सोनमा उतारी लेल हे सखिया ।
एतें हमें जनतों अहो रामा सोनमा होतै रे सपनमा
सोनमा बेचिए साधु कें जिमायतौं हे सखिया ।

ऋतु गीत

चौमासा

प्रथम मास आषाढ़ हे सखि साजि आयल जलधार हे ।
राजा दशरथ वचन कारण कैकइ देल बनवास हे ।।
साओन हे सखि सर्व सोहाओन एक तें राति अन्हार हे ।
शोक करलथिन माता कौशिल्या राम गेल वनवास हे ।।
आसिन हे सखि आस लागाओल सबके पुरियौ आस हे ।
एक नै पुरै जों तें रानी केकइ के देलखिन वनवास हे ।।
कातिक हे सखि पर्व लगतु हैं सब सखि गंगा स्नान हे ।
रथ साजल ठाढ़ लछुमन करत जे रङ-रङ खेल हे ।।
अगहन हे सखि अग्र सोहाओन चहुदिश उपजल धान हे
राजा दशरथ घरमे पड़ला तेजि देलखिन प्राण हे ।।

छौमासा

माघ हे सखि मेघ लागल, पिया चलल परदेश हे
अपनो वयस वहीं ठा बितैलक, हमरा के बारि वयस हे
फागुन हे सखि आम मोजरलै, कोइलो शब्द घमसान हे
कोइली शब्द सुनि हिया मोर सालै,
नयन नीर बहि गेल हे
चैत हे सखि फुलल बेली, भ्रमर लेल निज बास हे
तेजि मोहन गेलै मधुपुर, हमरा सेँ कओनें अपराध हे
बैसाख हे सखि उखम जवाला, पिया रोपल चम्पा गाछ हे
ठाढ़ ताही तर हम भेलौं, बहि गेल शीतल बयार हे

बरमासा

प्रथम मास अषाढ़ हे सखि साजि चलल जलधार हे ।
एहि प्रति कारन सेतु बान्हल सिया उदेश श्रीराम हे ।।
सावन हे सखि शब्द सुहावन रिमझिम बरसत बून्द हे ।
सबके बलमुआ रामा घरे-घरे ऐलै हमरो॑ बलम परदेश हे ।।
भादो हे सखि रैनि भयावन दूजे अन्हरिया राति हे ।
ठनका जे ठनकै रामा बिजुली जे चमकै से देखि जियरा डराय हे ।।
आसिन हे सखि आस लगाओल आसो ने पुरलै हमार हे ।
आसा जे पूरलै रामा कुवरी सौतिनिया के कत राखल लोभाय हे ।।
कातिक हे सखि पुण्य महीना सखि सब करै गंगा असनान हे ।
सब सखी पहिरै पाट पटम्बर हम धनि गुदरी पुरान हे ।।
अगहन हे सखि हरित सोहावन चहु दिश उपजल धान हे ।
सामा चकेबा रामा खेल करै सखि से देखि जिया हुलसाय हे ।।
पूस हे सखि ओस पड़ि गेल भीजि गेल नामी-नामी केश हे ।
जाड़ छेदै तन सुइ सन छन-छन, थर-थर काँपै करेज हे ।।
माघ हे सखि जाड़ा लगतु है देह थर-थर काँपै हे ।
पिया जे होतिया रामा कोरवा लगैतियौं कटतै जाड़ हमार हे ।।
फागुन हे सखि रंग महीना सब सखि खेलै पिया संग हे ।
से देखि हमरों जियरा तरसै ककरा पर दियै हम रंग हे ।।
चैत हे सखि सब वन फूलै फूलवा जे फूलै गुलाब हे ।
सखि सब फूलै रामा पियाजी के संग में हमरों फूल मलीन हे ।।

बैसाख हे सखि पिया नहि ऐलै विरह लहकत गात हे ।
दिन जे कटै रामा कानतें-कानतें लहकतै बीतै सारी राति हे ।।
जेठ हे सखि ऐलै बलमजी पूरल मन केरों आस हे ।
बाकी हे दिन सखि मंगल गाबथि रैन बितावथि पिया साथ हे ।।

अंगिका लोकगाथा

बाबा सिरपत महाराज

बाबा सिरपैत ऐलै बीड़ी गमैल सैं
राजा मंगल सिंह लानलकैं दोस्ती लगाय कें
भीड़िया नौरंगा बहियार में
बाबा सिरपैत देलकैं बथान गाय कें
बाबा सिरपैत के छैं महीना बीत गेले माघें सें
तब जायके बाबा सिरपैत के बेल पर ख्याल परि गेलै
हो कमलदास बगड़ैत छैं महीना बीत रहल है
गाय लेके चौथम में
आबै गाय उचाड़ के ले जेबै अपना गाँव बीडी गमैलें
हमरा जे कि बेल के पश्चाताप लगले रहि जैते
से नै आयखुन हम्मर मों न भेले कि
भौआ कोठिकें बेल खाय लेथहों
तब कमलदास बाबा सिरपैत के बोल सुनके कहै छै
हो मरर कथी लें भौआं के नाम लै, छे भौआं छै विखबाध
जे कोय भौआ के बेलखाय छै
ओकर त्रिया नेहरे में रनखेप खेपै छै
सेने आय खुनी बेर से कुबेर होय गेलों
से तोंय काईल खुनी प्राते में बेल खाय लिहो भौआं के
बाबा सिरपैत कैह रहले कमलदास बगड़ैत कै
हो बगड़ैत जे मरद के एक दिन जन्म होय छै,
ओकर सारा होइवै करतै से नै
तोंय कतबो कहभो ने मानबो बात
ई तोंय हमरा समैद दे कि/कौन बों न में मंजूर बोले छै
ई एक बात आरो समैद दै कि
कौन बांध में बाघ हरिण सियार बोले छै
कहलकै हो मरर बाबू बगीचा नेरहिया बोंन में बोले छै मंजूर
भौआं कोठी बांध में बाघ हरिण सियार हुमैर रहलै छै

बाबा सिरपैत कमलनाथ बगड़ैत के सुनैये
बाबा सिरपैत भौआं के बेल खाय के पैरा धैर लेलकेॅ
जैते जैते आगू एक सुखल सिम्मर मिललै
वे सिम्मर पर काला बादिल बैठल रहै
से बोल बोले लागलै कुबोल
बाबा सिरपैत तेॅ बोल के सुन हड़बड़ाय गेलै
तब जायके कहै छै रे कागा
आन दिन बोल बोलै रहैं सुबोल
आयखानी तै जतरा के बेर में तोंय कुबोल बोले छैं
जो तोरा बोल के भौआं में सुफल होय जैते ने
तै एत्तेय बथान पर तोरा दूध-भात के भोजन करैवोॅ ।
तब जायके बादिल सुरपैत के बोल सुनकेॅ ।
कहलके तोहर दूध भात तोरे बारहे
होइत प्रातः तोहर भौआं में रूधिर पीबोॅ ।
कहलके रे कागा-जात में लौआ, बोन में झौआ
पंक्षी में कौआ-ई तीनों एक्के जात होय छै।
बाबा सिरपैत मारलकेॅ कौआ के पटकन उड़ाय देलकेॅ
भौआं केॅ, अपने अब बेल के पंथ धैर लेलके भौआं धार केॅ
जैते जैते बेल गाछ के पास पहुँच गेलै
घूइम-घूइम के बेल देखे लागलै कि कहैन बेल छै।
बाबा सिरपैत जब बेल के ऊपर देखलकेॅ
तै एकर मोॅन हरषित भैय गेलै
नीचो में देखे छै तेॅ झड़ुवा वेल ढेर लागल छै
बाबा सिरपैत सोचे छै रै दैबा
जब गाछे लिंगुन बेल ऐसने ते नीचा वाला कि खाइब
गाछ से तोड़केॅ खाइब
जब जायके बाबा सिरपैत मारे छै पटकन वेल गाछ पर

जैहने पटकन मारलकेॅ तहिने बेल पर लसैक गेलै।
जब पटकन लसकैत देखे छै/तै हड़ौती मारलके बेल गाछ पर
हड़ौती उड़लै चैल गेले बागमती किनार

बाबा सिरपैत लाठीये के साथ दरबर मारके जाय रहल छै
जैहिने बाबा सिरपत हाथ के लाठी उठाय लेलके
लौट के बाबा सिरपैत फिरो बेल गाछ तोंर चलले
जैहिने बेल गाछ तोर बाबा सिरपैत आवै छै
ताहिने उन्ने बाघ खड़ा देखलकै।/बाबा सिरपैत कहलके।
रे बाघ तोंहू पिनै लुल्ही बाघिन के दूध
हम्में पीलियें माय चुनगा के दूध
दोनों माय के दूध के भौआं में मठभेर कैय लें
केकरा माय के दूध आय भौआं में बरीया होय छै।
ऐतना बोल जब बाघ सुनलकें बाबा सिरपैत कें
तें बाघ जान लेकै भाइग गेलें
मारलकै हड़ौती ते घघरीये हेलाय देलकें
तब बाबा सिरपैत फेर आबै छै बेल गाछ तर
देखें छै बदल दें माय बाबा सिरपैत के व्यवहार
चैल देलके माय बदल देय माय कामा लिंगा।
गेलै माय बदलदैय माय कामा से शर्त कराय लै छै
अब माय कामा कैह रहलै कि बात रहै
जे शर्त करैने रहे- अबे माँगों कि माँगे छै।
तब जायके माय कहै लागले माय कामा के
कहलकें कौन देश से गुअरना ऐलै
जै सौसे भौआं कें रांर करने जा रहलै
ई कुल बाघ कें मारकें घेघरी में हेलाय देलकै ई गुअरना।
से नै गुअरना घूर कें नै जाय
तब जायके माय कामा कहै छै माय बदलते कें
कि लहुऐले बाघिन छै प्रसुता भेल छै
से ने ऐकरे हुलाय दही गुअरना पर
तब जाय के माय कामा बाघिन के हुलाय देलकें बाबा सिरपत पर
जब देखलकें बाबा सिरपैत कि बाघिन आय रहलै
ये पर बाबा सिरपैत कैह रहलै कि गे बाघिन
जात के मरद कै मारलियों ते घघरी हेल गेलों
आब तोरा जो कि एक्को लाठी या थप्पर मारे छियो

तै सात गाय के पाप लिखतें/तोंय कंगुरिया अंगुरी सटाय दही
राम-राम के प्राण तेज देवै।
बाबा सिरपैत सुईत रहलै आरो कहलकें
जब तोंय रात भैर के रखवाली करभी की/नेरहिया कुकुर नै भखै
जों भैख लेलके तै कुल बाधिन के हम्में रांर कर देवों
आब बाबा सिरपत राजा मंगल सिंह के ड्योढ़ी चललै
निशि भाग रात में
वैह टैम में राजा मंगल सिंह सुतल रहे लाली सेज पलंग पर
बाबा सिरपैत सिरहौना में जायके खड़ा होय गेलै
कहे छौ हो राजा- बड़ी दोस्ती लगाय के
हमरा बीड़ी गमैल से चौथम राज लानले है।
एक बेल के कारणें अच्छेत प्राण हम्में गमेलों
ई मिट्टी के हमारा होइत प्रातेः संस्कार करिहौ
ने ते हमार मट्टी कौआ चील भैख लेते तै
कुल राजपूतनी के रांर कैर देवों।
डेरिहा डेरिया धौला बाघ बैठाय देबों
बसल चौथम उजाड़ देवो उजरल करूबा वसाय देवों
ई सपना दें के बाबा सिरपैत अलोपित भैय गेले।
राजा मंगल सिंह सपना देखलकें चेहाय के उइठ गेलें।
तब राजा मंगल सिंह उठ बैठके रात के समय काटलके
होइत प्राते सौर सिपाही के बोललकें
सिपाही ऐलै- कहे लागलें हो मालिक
कौन आदेश से हमरा सिनी के बोलवैलिये
राजा कहलकै- सुने सिपाही
जो आय सौंसे चौथम ढोलहा दे दही
आय भौआं जेबै शिकार खेलें लें
तब जाय के जेतना रहे फौजसिनी सब पहुँच गेले
बस राजा मंगल सिंह हाथी कैसके चैढ़ लेलकें
आगू-आगू राज मंगल सिंह
पीछू-पीछू सौर सिपाही जाय लागलै
यै पार जब टैप गेले तब जायके सांझ के

सभ्भे शिकार करै लेली भेज देलके
सब सिपाही के शिकार करैलें भेज देलकें
तै कहैं कुछ नै मिललै
तब फिरो सब राजा मंगल सिंह लुंग चैल आबै छै
कहलकै एक्कोगो नै शिकार कहें मिललै
अब राजा मंगल सिंह कैह रहलै
बाबा सिरपैत के कि हमरा कोय दोष नै।
साख रखै छियो नीचा धरती धरम उपर चांद सुरूज
ओयजीना आकाशवाणी से आवाज दै छै
कि हौ राजा हम्में घघरी किनार में कुआं लिग छियो
सुनलके तब जाय के राजा मंगल सिंह
अपने सौर सिपाही से कहै छै कि
एक वारी बगली शिकार करें कुछ फंसवै करते
तब सब सिपाही बगली वाली शिकार करै लागलै।

यहाँ से वहाँ तक जैते-जेते बाबा सिरपत रहे सुतल
बैठाम सिपाही जायकें देखलकें बाबा सिरपैत के सुतल
पलैट-पलैट के सब सिपाही चैल ऐले राजा लिंग
कहलके हो राजा साहब जैसन सूरत ऊ लहास के छै
वैसन सूरत तोर नै छौ।
राजा मंगल सिंह कहलकें- धूर- बुड़बक
ओकरे तें शिकार कैर रहलिये, वहाँ जे छै सुतल
तब सिपाही राजा मंगल सिंह के लेकें बाबा सिरपत लुंग गेलै
तब जायके वैह सौर सिपाही लेके मुक्ति देलाय के
जल प्रवाह कैर देलके आब बाबा सिरपैत कै
बारह वरीस भूत योनि में बीत रहले यै।
वै टेम में माय मोरंग के चढ़ाय कैर रहलें
अपना माया से माय सोलहों श्रृंगार करलकै
तब माय कताने अपन सूरत दरपन में देखै छै।
माय के सूरत उगल सुरूज के मलिन कैर दैलकै।
अब माय जी मोंन मे सोचे लागलै

ऐहिने सूरत में मोरंग घूरथिहों।
हमारो मोंन के मनकामना पूरा होय जैथिहो।
अब माय जी अपना माया से टूटल फूटल डोली निर्माण करै लागलै।
झाड़ॅ-झाड़ॅ के पीताम्बरी के ओहार दिये लागलै।
तोर में माय कताने तोषक ताकिया प्रेम से लगाय देलखीन
अपने मायजी ओय डोली में बैठ रहलखीन
बतीसो कहार के पुकार करै लागलै
रे कहरबा केने सें घोर में बैठल छैं/जल्दी आवें हमरा नजदीक।
माय के बोल कहार सुनै छै
सभ्भे कहार मलैक-मलैक ऐलै माय कताने लुंग।
कहलके हे माय कताने/तोरा राज में बारह बरस बसलियो
कैहियों ने कैलें हमरो पुकार
आय कौन असगुन से हम्मर पुकार कैने छै
से हो असगुन कै दे हमरा बताय
माय कताने कहलके रे कहरा
हम्में बड़ी सौर सगुन से ई डोली के सजैने छी
आय मोरंग के चढ़ाय करबै/बूढ़वा बेदरा के जोरॅ से बेराय दही
चुन-चुन के गबरू जुआन भिड़िहे डोली में
लाख जतन से उठवै से कहार
तिलौ भैर दोली टस से मस ने भेलै
कहल के रे कहरा- डोली से हैट जो बेलाग होय जो
देख लही हम्मर अजमैत
माय कताने के कहरा बोल सुनकें
दोली से सब भैय गेलै बेलाग
जैसे कहरा के बेलाग होइते देख
रूप माय जी तखिने अपना माया
विस्तार कैर लेलके कुसुमी महारास से।
नीचा माय जी धरती छोड़े छै, ऊपर आसमान छोड़े छै
बीचोंबीच माय दोली के देलके उड़ाय-कामरू मोरंग राज
सगुनन डोली जाय कमरू राज माय कताने के
जैहिने वहाँ से दोली उड़ै छै।

तहिने हाहाकार देने जाय रहल छै।
उड़ल डोली सिमान पर पहुँच गेलै।
बाबा सिरपत भौआं में बारह वरीस से मैरके
भूत योनि में पड़ल छै-डोली के हाहाकार
जब बाबा सिरपैत सुनलकै ने आठो अंग चहाय गेलै।

उठकै बाबा सिरपत भौआं में बैठ रहलै।
बैठल-बैठल चारो बगल हिवै लागलै
उड़ल नजर दोली पर पैर गेले
दोली देखकेँ बाबा सिरपैत मोंन में विचार करै लागलै
कहलके रे दैबा।/बारह वरीस हम्में भौआं में भूतयोनि में रहलिये
कहियों नै ऐसन हम्में अचरज देखलियेँ
केकरा सिनी हे देवता मुनि जग में अवतार लेलकै
बिना कहार के डोली उड़ैने जाय रहल छै
नरी लोग के डोली रहथिये रे तेँ
आगू-पीछू बतीसो कहार रहथिये
ई डोली लागे माय कताने देवी के रहे
कौन विधि आय हम्में ई डोली केँ दर्शन करबै
जै मरल मैट भौआं में सुफल भय जैते।
मौंन में ध्यान धैरकेँ।
बाबा सिरपैत सुग्गा के रूप धैर लेलकेँ, उड़ गेले ऊपर
मंडरैते मंडरैते जाय के डोली पर बैठ गेलै।
जैसे सुग्गा बैठे छै डोली पर
वैसे उड़ल डोली विलैम्ब गेले धरती पर
डोली विलमाय बाबा डोली के आगां खाड़ भैय गेलेँ
तब माय कताने मोंन में सोचे लागले-रे दैवा
बड़ी सौर सगुण से डोली उड़ैलिये।
कौन असगुण से उड़ल डोली धरती पर विलैम गेलेँ
मौन में सोचि के माय अगला परदा
डोली से हटाय देलकेँ हिवै लागले चारो बगल
के ऐसन दूत-भूत छै जे उड़ल डोली के विलमाय देलकेँ

माय जी के नजर आंगा सुग्गा पर पैर गेलै
आब सुग्गा के कहै लागलै-कि रे सुग्गा
के तोंय दुतभूत छिके-कि लुच्चा लोफर छिकें।
कियै हमार डोली के बिलमाय देलें।
बोलवें ते बोलें जल्दी तोंय अपन नाम
देवो दूरभाख ते जैर के भसम होय जेवैं।
माय जी के बोल बाबा सिरपैत सुनै छै
कहलके माय जी के दिन भैर तौय डोली विलबैमें
तब हम अपन दुःख बिपैत कहवो माय
माय कताने ने सुग्गा के बोल सुनलकें
तै डोली से बाहर होय गेले।
बाबा सिरपैत माय कताने के चरण में लपटाय गेलै
कैन-कैनके माय कताने के कहे लागले अपन दुःख विपैत
हे माय जी नै हम्में दूतभूत छिकियें
नै हम्में लच्चा लोफर छिकिये
माय चुनगा के कोख से हम्में अवतार लेलिये
माय चुनगा हम्मर नाम सिरपैत नाम रखलकें
चौथम के राजा मंगल सिंह के माय कारी कोशी
स्नान करै ले गेले बीड़ी गमैल मैगरी राज
वहैं राजा मंगल सिंह हमरा से दोस्ती लगाय के
बीड़ी गमैल से चौथम राज लानलके
कमल बगड़ैत के गाय रोमाय के भौआं कोठी गेलिये वेल खाय लें।
बेलवो नै खेलिये अच्छेते जीवन गमाय देलिये
मरल मैट हम्मर भौआं उसर खेत में लौटेयै।
बेर-बेर आसरा धैरके ऐलियो मरल मैटके शरण लगाय लै माय।
मौन भैर माय तोयं जस देबहो तोर हम डोली के छड़ीदार बैन जेबों
जैहिने मैगरी में बाबा भोला के छड़ीदार शोभे छै
वैहिने माय तोरो दोली के हम्में छड़ीदार शोभवों।
जोहो जोहो माय अरहट कहभो सब अरहट के हटेते रहवों
बाबा सिरपत के बोल आवे मायजी सुनै छै
हो मरर डोली-डोली कथीलें घोषे छैय

हम्मर डोली जाय छै कमरू राज
कमरू में वसै छै जसिया वसिया धामिन
बोहो धामिन छै बड़ी गुण के वाण के अपार
बालेपन में जसिया बसिया माय जोर में गेल रहे अपन ननिहार
वहैं कोखिया दैके जसिया वसिया गुणवाण सिखलकेँ
ऐती दिन रहे जसिया-वसिया लड़की नादान
आव भैय गेलै सोलह के तरूणी जवान
सभ्भे सखी बहिन के देखे छै
छोट-छोट गोदी में बालकवा।
वै बालक के देखके जसिया-वसिया के कोख के ममोल
आय रहले आय।
जैसन-ईश्वर सकल गैरह देलको तोंर
धामिन तोरा गुणवाण में लोभाय लेतोँ।
भैर दिन, तोरा भेड़ा खस्सी जां सरूप बनैतो।
बान्हतो तोरा खैर के खूंटा रेशम डोर लगाय केँ।
भूख लगतो तैं तोरा दुबरी जे खिलैतौ
पियास लगतो तैं फूटल कठौत में पैइन पिलैतौ।
सांझ पड़तो ते तोरा मनुष बनैतो।
रात में धामिन तोरा छप्पन प्रकार के खिलैतो भोजन
सूते ले तोरा लाली सेज पलंग बिछाय देतों
दोनों बगल जसिया-बसिया दोनों बहिन सुततो।
बीच में तोरा सूतायकै जुआ पचीसी खेलतो।
घूर जा तोंय चौठम राज, मौरंग में नै इज्जत बचतो।
चौठम के राजा मंगल सिंह तोरा घोरॅ-घोरॅ पिन्डी बन्हाय देतो।
गंगा जल से पिण्डी पखाड़ देतो।
सांझ पड़तै जरल दीरी तोरा सांझ संझाय देतो।
बैठले ठकुराय करमैं चौठम राज में
आवे जायके कहलके हे माय कताने
चौथम-चौथम किये घोषे छोहो
चौथम राज में वरैहिया राजपूत बसै छै
जातके राजपूत बहुत क्रूर जे होय छै।

आन कोय हमरा जांचते फूल पान चढ़ाय के
वोहो राजपूत जांचते निकटी चढ़ाय कें
हमरा से मांगतें अड़ना भैस के सहदान
एक्कों ई जांच ने हमरा से पूर्ति होइतै
वान्हल पिण्डो के उठाय के घघरी में भंसाय देते
हम्में जेबे आय दोलिये संग साथ
सिरपैत के बोली माय कताने सुनै छै
कहलके हो मरर यही बात में तोंय घबड़ाय गेले

जे हो राजा तोरा से मांगतो हमें पूर्ति करवो।
हमर बान्हल तोंय खोइल देवहो
तोहर बान्हल खोलें नै खोलते दुनिया में
अब ऐजीना माय कताने अचरा काट चिठ्ठी बनैलके।
चिठ्ठी पर लिखै लागले बाबा सिहेंश्वर के कुशल
कहलके हो बाबा सिहेंश्वर ऐगो सेवक जाय रहलो तोरा लिंगा।
ई सेवक के तोंय मौन भैर जस दिहो
बीचे चिठ्ठिया पर माय हरिनाम लिख देलके
माय कताने चिठी लिखके भैय गलैय सयतुली
आबै कहै लागलै हो मरर केने गेले जल्दी आवो
बाबा सिरपैत माय जी के बोल सुनै छै।

मलैक के बाबा सिरपैत माय कताने के आगू खड़ा भैय गेलै
आब कहै छै-हे माय जी कौन आरहट से हम्मर पुकार केल्हो।
से हो आरहट हमरा के कैह देय।
माय कताने कहै लागलै।
बान्हों मरर चिट्ठी के तोंय चादर के खूंट में
जाहो बाबा सिहेंश्वर थान मैगरी राज
ऐतना बोल बाबा सिरपैत सुनै छै
बाबा सिरपैत के दोनों ऐंख से लोर ढरै लागलै
बोल-बोल कहै लागलै
हे मायजी सिहेंश्वर-सिहेंश्वर किये घोषै छौहो।

हमरा ते सिहेंश्वर के बाट देखलों नै छै
कोन विधि हम्में जैवै बाबा सिहेंश्वर धाम
बाबा सिरपैत के बोली माय कताने सुनै छै
कहलके भले बोल में गेलैं तोय घबड़ाय
भूलल बटिया तोरा सुबटिया चढ़ेने जैबों
बाबा सिरपैत माय कताने से चिठी लेकें बान्हलकें अपना चादर में।
सिर में के बैन्ह लेलके चादर के
दोनों कर जोड़के माय जी के प्रणाम करै लागलै
प्रणाम, दण्डवैत बजाय लेलके माय कताने केय
राम-राम के बाबा सिरपैत सिहेंश्वर के बाट धैर लेलकें
जैते-जैते नदी परमाने किनार पर पहुँच गेलै।
किनार चढ़ै कें चारो तरफ हिवै लागलै
कन्ने छै बाबा सिहेंश्वर के मंदिर
चारो बगल नजर खिरैलके- ते देखे छै
नदी परमानों के बीच में बाबा भोला के मंदिर
मंदिर देखके बाबा मौन में विचार करै लागलै
कहलकै रे दैवा चारो तरफ तै देखे छिये जल्ले विस्तार।
यै नदी में नाव मल्लाह कुछ ने देखे छिये।
कोन विधि हम्में बाबा भोला के दर्शन करवै।
मन में सोचके बाबा सिरपैत फेरो सुग्गा रूप धैर लेलकै
सुग्गा के रूप धैरकें बाबा सिरपैत उड़ गेले ऊपर
तखिने बाबा सिहेंश्वर देखे छै मंदिर पर चढ़कै सुग्गा के ऊपर उड़ते
अपने मंदिर से उतैर के मंदिर में पैश गेले
पैस के अनठाय के मंदिर में सूत गेले बाबा सिहेंश्वर
ओतने भर में सुग्गा पहुँच जाय छे बाबा के दरबार
चारों तरफ घूर-घूर के बाबा सिहेंश्वर के धरम द्वार खोजै लागलै
कहैं ने मिलले बाबा सिहेंश्वर के धरम द्वार
पूरब मोखा टेबके बैठ गेलै बाबा सिरपैत
बाबा सिरपैत कोचाल करै लागले
कहलके हो बाबा सिहेंश्वर जैहिने आय तोरा दरबार में
दर्शन लेली कलैट रहलिये

वोहिने तोरा जल बिनू तोरो शरीर कलटैवो
जेतना कमरथुआ ऐतो आधे बाट से घूरैवो
एक्को शीशी ने तोरा हम्में जल निश्तार हुवै देवों
बाबा सिरपैत के कोचाल बाबा सिहेंश्वर सुनै छै
तड़ाक मंदिर के फाटक खुइल जाय छै
तखिने बाबा सिरपैत देखे छै मंदिर के फाटक खुलथें
दोनों कर जोर के पेश गेलै बाबा सिहेंश्वर के मंदिर
चिठ्ठी खोल के बाबा सिरपैत बाबा सिहेंश्वर के जंघा पर धैर देलकै
दोनों कर जोड़के बाबा सिरपैत बाबा सिहेंश्वर के प्रणाम करैयै
बाबा सिहेंश्वर जे कि चिट्ठी के उलटाय के पढ़ै लागलै
चिट्ठी पढ़ै छै मौने मोन में मुसैक मुसैक हंसे लागले
बोल-बोल के बाबा सिरपैत के कहै लागलै।
कहलके हो मरर जे है दिन तोय बीड़ी गमैल में
माय चुनगा के कोख में अवतार लेलहो
वैहे दिन विधाता तोरा चौठम में ठकुराय लिखलकों
हाथ के लिखलका रहथियो तै तय हाथ से मिटाय देथिहों।

विधिके लिखल मैटे छै दुनिया संसार।
घुर जा चौथमे राज में गाय भैंस के भला करिहौ
नित दिन तोंय दूध के ढ़ार पीविहों
बाबा सिरपैत बाबा सिहेंश्वर से जस ले लेलकै
आय जे कि बाबा सिरपत चौठम राज के भौआं में ठकुराय कैर रहलै।

अंगिका फेकड़ा

अड़गड़ मारूँ, बड़ घर मारूँ
बासी भात खेलि-खलि खाँव ।

•

अटकन-मटकन, दहिया चटकन
खैरा गोटी रस रस डोले
माघ मास करेला फूले
नाम बताव के तोहें गोरी
जमुआ गोरी
तोहोरों सोहाग गोरी
लाग लगावें, खीर पकावें
मिट्ठों खीर कौनें खाय
दीदी खाय, भैयाँ खाय
कान पकड़लें बिनू जाय ।

•

अटकन-मटकन, दहिया चटकन
बर फूले, करेला फूले
इरिच-मिरिच मिरचाय के झावा
हाथी दाँत समुद्र के लावा
लौआ लाठी चन्दन काठी
मार पड़ोकी पाँजड़ तोड़ ।

•

अटकन-मटकन दहिया चटकन
बारा रे बरेली फूल, संझा फूलै करेली फूल
जैइयैं बेटी गंगा पार
गंगा पार से लानियैं कसेली
कच्चा-कच्चा तोहें खैइयैं
पक्का-पक्का सासु के दीयैं
गंगा मे नभैतै रहियैं
आँखी-पाँखी लगले रहियैं।

•

अट्टा-पट्टा नुनु कें सात बेटा
राजा, पाता, सीत, वसन्त, कुतवा
अड़गड़ मारो बड़गड़ जाऊँ,
पानी पीये पोखरिये जाऊँ
बबुआ कहै काँखी तर जाऊँ !

•

अट्टा ऐन्हों, पट्टा ऐन्हों
धोबिया के पाट ऐन्हों
कुम्हरा के चाक ऐन्हों
बीचों गामों में मुकद्धम मुखिया
बनी जइहों तोंय राजा बेटा
गोड़ों लागों, ठाकुर जी कें,
धरती धरमों कें
साठी माय कें ।

•

अट्टा-पट्टा, नूनू कें पाँच बेट्टा
कोय गेलै गाय चराय लें,
कोय गेलै भैंसी में
नूनू हाथों में दूध-भात
गस-गस खैलकै ।

•

अथरो-बिथरो सीमा गेलै सीम तोड़ें
नीमा गेलै नीम तोड़ें
पानी में पड़ुआ, दा बूढ़ी भात
आभी डभकै छै भात।
अभरो-बिथरो सीमा गेलै सीम तोड़ें
नीमा गेलै नीम तोड़ें
पानी में पड़ुआ, दा बूढ़ी भात।
आभी माँड़वै के हाथ।

अथरो-बिथरी सीमा गेलै सीम तोड़ें
.....
आभी गोबरे के हाथ!
अथरो.....
आभी गरमे छै भात।
अथरो.....
देल्हियौ दू लात
भुक्खल बुढ़िया झुक्कल जाय
सौंसे रस्ता कपसल जाय।

•

अलिया गे झलिया गे
बाप गेलौ पुरैनिया गे
लानतौ लाल-लाल बिछिया गे
कोठी तर छिपैयैं गे
बालू में नुकैयैं गे
झमकल-झमकल जैहियें गे
सास कें गोड़ें लगिहें गे
ननदी कें ठुनकैहियैं गे ।

•

आन-कान बियाबान
बियाबान में हुम्मा
चुगला रों बदलै दुम्मा
चुगला रों दुम्मा टूटी गेल
चुगला के हुम्मा पकड़ी लेल।

•

आबें की करभौ, देखों हो भाय
मंगरू ढोढ़ाय पढ़ी-लिखी जाय
बाबू हो भाय, पोथी नोची खाय।

•

आमो के अमरैया, दौड़लों चल रे गाँव
खेल-खेल कबड्डिया, पिपरा के छाँव
एकाँ-एकी मारवौ, तभिये मिलतौ ठाँव।

•

आमो के लकड़ी, बेलो के पात
लौव्वा-बराहमन वरो के बाप।

•

आलकी नै पालकी, बेल नै बूटा
गज्जड़-धमगज्जड़
साधु बजावै चूटा, बाँधल गाय खूटा
सधुआ के देखी गैया भड़की गेल
देखो नुनुआँ रूसी गेल
नुनुआँ कें आबें मौसी बोलाय
मौसी देखी नुनु बौसी जाय
लानकै चुक्का दुधवा दुहाय
नुनु संग मौसी गबर-गबर खाय।
आव गे माय आव
दुधवा पिलाव
मक्खन-मिसरी घोरी कें दहीं गे पिलाय
तबें नुनुआँ बोलतौ चाँच, चाँय, चाँय।

•

आव रे कौआ उचरी कें
नूनू खैतों कुचरी कें
आव रे कौआ ओर सें
नूनू खैतों कौर सें ।

•

आव आव रे पर्वत सुगा
अण्डा पारी-पारी दें जो ।
तोहरा अण्डा आग लागौ
नूनू आँखी नीन गे !

•

इंदर बाबा रों ढेरे बेटी
कोय देहरी, कोय मोखा

जे सरंगो में सीढ़ी लगैलकै
बहू भेलै पनसोखा हो भैया।

•

ईक शीक सकन के डोरी
बाजू बन्ने नत्थे चोरी
गुल गुलाठी, गुल गुलाठी
भाड़ झबेली, भाड़ झबेली
धूम धड़क्का, धूम धड़क्का
भाभी घर में बजै पड़क्का
भैया दागै साँढ़ सलाका
चोर-सिपाही दौड़-दौड़क्का
उप-चुप गया।

•

ई साँसो के कब तांच आस
कब ताँय आस?
जब ताँय पास, जब ताँय पास।
ई साँसो के कब ताँय आस,
कब ताँय आस?
तेल-दिया रों जब ताँय साथ।
ई साँसो रों कब ताँय आस,
कब ताँय आस?
ईश्वर जब तांय देथौं साथ।

•

उगलों धूप में झड़ो पड़ै छै
गिदड़ा-गिदड़ी के बीहा होय छै
लुंगा-फट्टा दहीं आबे ओकरा
हल्ला करलको गाँव रों छोकड़ा।

•

उठाय लेल कहरा, छूटी गेलै साथी
बाबा के मंदिरवा मे दियरा नै बाती
घुप्प भेलै अन्हरिया, जुगनू भेलै साथी।

•

ऊबु पान फूल पत्ता
गुलाबी रंग कच्चा
कटोरी में के आगिन
बुझाय दें मोरी भौजी ।

•

उर्र बकरिया घाँस खो
चुक्का लें बथान जो
चुक्का गेलौ फूटी
दूध लेलकौ लूटी ।

•

उर्र, बकरिया घास खो
चुक्का ले बथान जो
चुक्का गेलै फूटी, नुनु गेलै रूसी।

•

एक छै बुढिया, चंदा के थाली
जेकरा ऊपर कदमों के डाली
वै बीच चरखा चलाय हाली-हाली
चरखा के चक्का खुली-खुली गेल
बुढ़िया के सूता टूटी-टूटी गेल
उड़ी-उड़ी सूता नीचे आवी गेल
जेकरा नुनुआँ लोकी लेल।

•

एक तारा दू तारा
मदन गोपाल तारा
मदना के बेटी—बड़ी झगड़ाही
अक्का गोल-गोल, पक्का पान
शिवों के बेटी—कन्या-दान
काना रे कनतुल्ला-तुल्ला
पीपर गाछी मारे गुल्ला
साँप बोले कों-कों, कबुत्तर माँगे दाना
हम्में तोरों नाना ।

•

एक तारा दू तारा, मदन गोपाल तारा
मदना के बेटी बड़ी भगड़ाई
झगड़ल-भगड़ल नदी-तट गेल
नदी किनारा सें बालू लेल
वहा बालू कनुनिया के देल
कनुनिया बेचारी भुंजा देल
बहू भुंजा गोधोरैया लै लेल
गोधोरैया बेचारा दुधवा देल
वहू दुधवा बिलाय पीवी गेल
बिलाय बेचारी मूसा देल
वहो मूसा चिल्हा लै लेल
चिल्हा बेचारा पँखना देल
सोहो पँखना राजा लै लेल
राजा के डोली दुलकी चाल
चंपा के नावों पर उड़ै छै पाल।

•

एक मटर पैलें छी
एँड़िया तर नुकैलें छी
सातो गोतनी पीसै छै
एक गोतनी रूसली
केकरा लें?
बुढ़वा लें।
बुढ़वा गेलों छै बारी
कौआँ नोचै छै दाढ़ी
छोड़, छोड़ रे कौआ
अब नै जैबौ बारी
हाथी पर हथमान भैया
घोड़ा पर रजपूत
डोली पर बिहौती कनियाँ
खोपों हुएँ मजबूत ।

•

एक राजा रों दस दरवाजा
छुर्गम-दुर्गम, भारी-भारी
वै पर बैठल बंदूकधारी
बंदूकधारी करै पुकार
अंगरेज सें रहियो होशियार।

•

ओ ना मा सी धं
गुरूजी पढ़ंग
कुइयाँ में काँटों
गुरूजी नाँटों ।

•

ओ ना मा सी धं
गुरूजी पढ़ंग
चटिया लंग
बाजे मृदंग ।

•

ओ-रे रे नूनू ओर बटना
माय बाप गेलों छौ चिचोर कटना
बाप जिमिदरबा घोड़वा पर
माय जिमिदरनी डोलवा पर
पैला में चूड़ा मचक मारै छै
सीका पर दही हिलोड़ मारै छै ।

•

ओ-रे रे नूनू ओर बटना
माय गेल छौं कूटें पीसें
बाप गाड़ीमान
दादा गेलों छौं बाँस काटें
दादी हलुमान
फूफू तें छेकौ लुबड़ी
पानी पियै के तुमड़ी
साँझै घूरी कें एथौं नूनू
भर अैंगना ।

•

औंटी-पौंटी फूल-पान
बीचों में गोसांय-थान
गोसांच गेलौ नाम्ही
फुलायस ले थामी
भगत के दैहें पानी।
औंटी-पौंटी तार
बीच में सरदार
सरदार गेलौ पार
ओकरों अन-धन करीहें उसार।
औंटी-पौंटी लौका
बीचो में गुखौका
आवी गेलौ खौका, दैहें सब्भैं मार।

•

औका-बौका, तीन तड़ौका
लौआ-लाठी, चन्नन काठी ।
चल गे बेटी गंगा पार
गंगा पार से आनबौ रेल
रेल गेलो चोरी, फुटलो कटोरी
इरिच-मिरिच मरचाइन कें झावा
हाथी दाँत सबुर नै पावा ।

•

औका-बौका, तीन तड़ौका
लौआ-लाठी, चन्दन काठी ।
बाग रे बग डोल-डोल
पनिया चुभुक ।

•

औका बौका, तीन तड़ौका
लौआ लाठी, चन्नन काठी ।
बाग रे बग डोल-डोल
सम्मर में करेला फूले
एक करेला नाम की ?
आई बिआई फूलें पानें—पचकी जा ।

•

औका-बौका, तीन तड़ौका
लौआ-लाठी, चन्नन काठी
चल चल बहिनो पार गे
पारों सें करेली लान
पक्का-पक्का हम्में खाँव
कच्चा-कच्चा तोहें खो
पकड़ बुच्ची कान गे ।

•

औठी-पौठी लौका
बीच में गू खौका ।

•

कन्ना गुज-गुज, महुआ डार
के-के जैभें गंगा पार
गंगा पार में बाघ छै, बघनिया छै
सिकरी डोलाबै छै
गंगा पार में उपजल धान
धीया पूता के काटबै कान ।

•

कन्ना गुज-गुज, महुआ डार
कहिया जैभें गंगा पार
गंगा पार में खेती के आढ़
तेलियाँ मारथौं चढ़ले लात
हमरों हाथ लाल, हमरों हाथ लाल ।

•

कबडि कबडुआ, लैं रे बुनि मडुआ
उखाड़ी लैहैं झँगुड़ी, बैठाव जरा टेंगड़ी।

•

कर्रा रे करैलें जो,
दक्खिन देश चरैलें जो
लाया कौड़ी देखें जो,

पनियां सुखैलें जो
पखना के उड़ैलें जो!

•

कल-कल कलिया, मूँग के फलिया
भर-भर डलिया लै जाय सलिया
सलिया के गलिया छूटी गेल
हमरों जीजा रूसी गेल।

•

कनियाँय मनियाँय झिंगाझोर
कनयाँय माय कें लें गेल चोर
दौड़ों हो शहर के लोग ।

•

करिया झुम्मर खेलै छी
लीख पटापट मारै छी ।

•

कागज-पत्तर
कलम दवात
इटा पाटी
सोने के टाट
टाट गिरा दे
पूरे आठ ।

•

कागा बैठै मुन्हां,
गल-गल करै ऐंगना
लुंगा-फट्टा खींची कें
घरो-ऐंगना नीपी कें
दरवाजा पर दहीं बिछौना
कल कें ऐतौ पहुना।

•

काठ के अजगर, लोहा के बाट
आदमी निगलै हाटे-हाट।

•

काठ के कठपुतली, डोर चलावै नाँटा
दाल-भात सुपुर-सुपुर मछरी में काँटा
छोटकी कें तेल-सिनूर, बड़की कें झोंटा।

•

काठों के नगरी, लोहा रों ठाठ
अजगर चललै हाटे हाट।

•

कान कनेठी, कान कनेठी
टटिया घर में लगै बनैठी
टटिया गुरु जी के सुक्खी गेल
बान-बनेठी झुक्की गेल
एक कुदक्का चटिया देल
गुरु जी के टटिया टूटी गेल
गुरु जी के डंडा घूरी गेल
सब्भे चटिया गुमसुम भेल
गुमसुम चटिया डंडा खाय
सब्भे चटिया टाट लगाय
टटिया के भीतर खटिया लगाय
गुरुजी के खटिया टूटी गेल
गुरु जी के चटिया रूसी गेल
गुरुवैनी आवी चटिया मनाय
फुर-फुर चटिया घर दिस जाय।

•

काना रे कनतुल्ला-तुल्ला
पीपर गाछी मारै गुल्ला
साँप बोलै—कों-कों
कबुत्तर खोजै दाना
फकीर तोरों नाना।

•

काली मैया छोटी-मोटी—पीन्है सावा रंग
ढाल आरो तलवारो लेलें नाँचे झामा-झम।

•

कोन्ना बनैलक सुंदर महला
महला बीच में चहुमुखी कोना
वैमे बैठल सुग्गा-मैना
सुग्गा-मैना उड़ी-उड़ी गेल
कोन्ना के कोना छोड़ी-छोड़ी देल
कोन्ना पुछलक कोन कोना
नौड़ी बोलले, है ठो कोना
कोन्ना खोजै चारो कोना।

•

की खैबे रे बनरा ?
दाल-भात खैबौ गे दीदी ।
केना सुतवे रे बनरा ?
कोला में सुतवौ गे दीदी ।
पाप लिखतौ रे बनरा
गंगा नहैवे गे दीदी ।
सरदी होतौ रे बनरा
हरदी फाँकवों गे दीदी ।
खोखी होतौ रे बनरा
खोख-मल्ला पिन्हबों गे दीदी ।

•

कोयरी, कुमी, कहार,
माँटी ओकरों आधार
सुती-उठी भोरे भोर
—कोदरा पार।

•

कोल कोलासी, भादो माँसी
भादो मास में उमड़ल नदिया
नदी किनारा बड़के गछिया
गाछी के नीचें बिछलों मचिया
वै चढ़ी बैठली एक ठो बुढ़िया
बुढ़िया हाथें एक ठो कुढ़िया
कुढ़िया भरलों हीरा-मोती
जिन्हैं कुढ़िया लुढ़की गेल
गिदड़ा के बीहा हुन्नै भेल।

•

कौआ रे कक्का, आम दे पक्का
मारवौ चभक्का
तबे हमरों-तोरों होतौ दोस्ती पक्का।

•

खेल सेल चुक्का, छो घर गोटी
दू घर फुक्का
हारी गेला पर लागतौ मुक्का।

•

गंगा-कोशी दीरा, परती-परी गाँव
नुनुवाँ खेलतै पिपरा के छाँव
रूपा आरो टाका लैके ऐतै काका
तबे नुनु नाँचतै ठुमुक-ठुमुक पाँव
हुलसी बूलें नुनुवां पाँ, पाँ, पाँ।

•

गंगा मैया झलमल, अगम रे नीर
चल रे माँझी तीरे-तीर।

•

गरदी-गरदिया, टेंगड़ी ले रे झाड़
खेल-खेल मसदिया, सिक्का देवौ गाड़
जों ऐतौ बरदिया देवौ बड़ी मार
तबे तम्में होवौ पाला के पार।

•

गहिर रे जमुना, अगम रे गांग
की लेवे दियरा—माँग, माँग, माँग।

•

गाँव के गँवारी, जिला के जवारी
देश कें देखों देसी, होलों जाय विदेशी
राजा आरु रानी—पोखरा भरावै पानी

पोखरा उड़ै धाजा, हे हो सुनों राजा–
नुनु बजावै बाजा।

•

गाय गेलौ रनें बनें
भैंस गेलौ बीजू वनें
कानी भैंसियाँ धान खाय छै
राजा बेटा हाँक दै छै
घूबे तें घूर गे
धान फूसूर ।

•

गिर-गिर गिर-गिर घिरनी सार
हमरों गोद्धा छौ तैयार
तोरों गोद्धा मक्खीमार
एकां-एकी देवौ उसार।

•

गोनू के गाय भेलों बलाय
दिन-दोपहर, भोरे-साँझ
सनियाँ लगाय
तहियो नै गैया भरी पेट खाय
आबें की करवों, बोलों हे दाय
हे गोनू, नै करों–हाय, हाय, हाय।

•

गोर-गोर नुनुवाँ, खूब छै रूप
जेना अन्हार घर में उगी गेलै धूप
ऐंगन-ऐंगन बाजे लागलै बाजा
नुनु के मामा लैके आवी गेलै खाजा
नुनु के मामी फटकै भरी चौ॔र सूप
नुनुवाँ कुरचौ खुब्बे खूब।

•

घग्यो रानी घग्घो रानी
घग्घो रानी पोखरा खनावै
पोखरा खनावै पथरा के पाट
पथरा के बीच में सोना के घाट
घाट बीच बैठल राजा महाजन
राजा महाजन झपकी लेल
घग्यो पोखरा में घुसी गेल
रामपियारी पूछी लेल–
घग्घो रानी कत्तें पानी?
रामपियारी, एत्तें पानी!

•

घना मजूर, घना मजूर
कहाँ में छिपलैं घना मजूर
बाइस बीघा के वनों में
तोरा लेवौ खोजी
जहाँ भी छिपले घना मजूर
चुप्पा-चुप, कुकरू-कूँ
नुनु करै छौ तोरा से प्रीत
आवी सुताय जो गावी कें गीत।

•

घुघुआ घू मलेल फूल
कोनें गाँव सुन?
बेला के धीया-पूता की खाय?
पाकल-पाकल गुल्लर खाय।
गुल्लर पियासे कन्ने जाय?
पोखरी दिस जाय।
पोखरी के बुढ़वा लै डंडा
गोनर-माय हे गोनर-माय
ऐलौं तोरों गोनर
झुलवा खेल, घुघुआ लेल
ऊपर गेलै देखों रेल
नीचें गेल खोइचा लेल
गोनरा के मूड़ी नीचे भेल
दोनों टेंगड़ी ऊपर गेल

ऊपर-नीचे घुघुआ खेल।

•

घुघुआ घू, मलेल फूल
घुघुआ मना, उपजल धना
सब धान खाय गेल सुग्गा मैना
मन्ना रे मन्ना लब्बों घर उठें
पुरानों घर बैठें ।

•

घोघो रानी कतना पानी
अतना पानी, अतना पानी ?

•

घोर-घोर मट्ठा, केकरों करभैं ठट्ठा
जे करैतै सट्ठा, ओकरे करवै ठट्ठा
जे पीतै दूध, वही होतै पट्ठा।

•

चंदा मामा, चंदा मामा
आरे आवों, बारे आवों
नदिया किनारी आवों
दूध-भात लेले आवों
नुनुवाँ के मुंहो में घुटूस।

•

चाँन मामू आरे यावों वारे यावों
नदिया किनारे आवों
चंपा केला, सुरका चूड़ा
भैंसी के दही
लेलें आवों, लेलें आवों
नूनू रों मुँहों में घुटुस ।

•

चान मामू चान मामू खुरपा दें।
सेहो खुरपा कथी लें?
घसवा गढ़ावै लें।
सेहो घसवा कथी लें?
गइया खिलावै लें।
सेहो गइया कथी लें?
दहिया जमावै लें।
औंटल गेल, पौटल गेल
कोठी तर जनमायल गेल
जोरन आनै गेलाँ छी
गोबर माखी ऐलाँ छी
नया पोखर गोड़ धोलाँ,
पोठिया मछली पैलाँ ।
चूल्हा लगाँ गेलाँ,
पाकै वास्तें देलाँ
चूल्हा में छेलै बुबुआ
सेहो काटलकै बुबुआ ।

•

चाँन मामू, चाँन मामू—चाभी दें।
सेहो चाभी कथी लें?
घरवा खोलबावै लें।
सेहो घरवा कथी लें?
गेहुँमा निकालै लें।
सेहो गहुँमा कथी लें?
अटवा पिसवावै लें।
से हो अटवा कथी लें?
पुड़िया पकावै लें।
सेहो पुड़िया कथी लें?
भौजो के पटवौ लें।
सेहो भौजो कथी लें?
नूनू के जन्मौ लें।
सेहो नूनू कथी लें?
गुल्ली-डंटा खेलै लें।
गुल्ली-डंटा टूटी गेल
नूनू बाबू रूसी गेल।

•

चान मामू, चान मामू—कचिया दे
कचिया कुटबाय लें।
सेहो कचिया कथी लें?
घसवा गढ़ावै लें।
सेहो घसवा कथी लें?
बैलवा खिलावै लें।
सेहो गोबर कथी लें?
ऐंगना निपावै लें।
सेहो ऐंगनां कथी लें?
गेहूँमा सुखावै लें।
सेहो गेहुमा कथी लें?
पुड़िया छकावै लें।
सेहो पुड़िया कथी लें?
नूनू कें जिम्हावै लें।

•

चरचों, चर-चों, टप्पर गाड़ी
वैमे जोरलो दू-दू पाड़ी
टप्पर आगू लाल पेटारी
टप्पर के चारो दिस साड़ी
गाड़ीवान गाड़ी हाँकै छै
वर-लोकनियाँ ठो दुलकै छै
लाल-लाल कनियाँय हुलकै छै।

•

चल गे चिलरों मोर खलिहान
खोयछा भरी देबौ रामसारी धान
वही धान के कुटिहें चूड़ा
नेतों जमैहिएं कोंर-कुटुम
सब्भै तोरा दिऍं आशीष
चिरयुग जिऐ नूनू, लाख बरिस ।

•

चिल्लर पटपट, गंगा हो लाल
हथिया सूढ़ ठुट्ठों पीपर पतझाड़
कौआ कानों, तेली बेमानों
मियाँ ढोलकिया, फूस कन्हैया ।

•

चलों हे हिरनी माय फूल तोड़ै लें
फूलों के गाछ तर ऐल्हौं जमाय
बेटी कें लेल्हखौं डोली चढ़ाय
ज्यौं-ज्यौं डोलिया डुलकल जाय
त्यौं-त्यौं बेटी हकरल जाय
बोंर बैठलों बरों तर
कनियाँय बैठली पीपरों तर
बरों कें लागलै दाँती
कनियाँय धूनें छाती ।

•

जंगल सें निकलै धाम-धुमड़ी
ओकरा नै नेंगड़ी, ओकरा नै टेंगड़ी
ओकरों चाम उघड़ी।

•

जद्दू बेचें कद्दू, बंगाली बेचें पान
जद्दू के एक बेटा, सेहो गाड़ीमान
जद्दू दूर गेलें हो ।

•

जाड़ा ऐल छै, पाड़ा ऐल छै
ओढ़ गुदड़ी ।
बुढ़िया के दमाद ऐल छै
मार मुँगड़ी ।

•

जेठ-आषाढ़ घन उमड़ै-घुमड़ै
सावन-भादो झम्मर-झम्मर
सखिया सब मिलि गावै झुम्मर।

•

जोरू के माय घर घुसी खाय
भाय के भाय दुआरिये ललाय।

•

झाँय-झूँ खपड़ी धीपेँ
लाबा फूटेँ, महुआ टुभुक ।

•

झमाझम काली—चमाचम रूप
ओझा नाँचौ लै के धूप।

•

झरिया ऐलै बुनरिया ऐलै
करका मेघ लगैलेँ ऐलै
डाला कुण्डा घोँर करोँ
बेटी केँ विदा करोँ।

•

झिंगा-झोर, झिंगा-झोर
कनियैन-मनियैन झिंगा-झोर
कनियैन-माय के लै गेलै चोर
सौंसे गाँव में होय गेलै शोर
चोर के मारलक भोरम-भोर।

•

डिग-डिग डिग्गा, होलै शोर
केकरो चलै नै आबेँ जोर
बरियोँ गोद्धा लेवौ तोर
बाजी पलटौ हमरोँ ओर।

•

डोल-डोलिच्या पाकड़ बिच्चा
बित्ती गेलौ आम-बगीच्या
लै आवें जाय गाछी तर सेँ
नै तेँ जलखै अपनोँ घर सेँ।

•

ताड़ काटूँ, तरकुन काटूँ,
काटूँ रे वनखाजा
हाथी पर छै राजा चलै,
झमकी बाजै बाजा।

•

ताय पूड़ी ताय
के-के पकाय
नूनू पकाय
नूनुहैं खाय ।

•

तार काटूँ, तनकुन काटूँ
काटूँ रे बनखज्जा
हाथी पर से घुंघर बोले
टन देँ केँ राजा
राजा के रजोली बेटी
भैया के दुपट्टा
हिच्च मारौं, घिच्च मारौं
चीचे हेनोँ बच्चा ।

•

तीन चिलमची, तेरह हुक्का
वैपर देखोँ धक्कम-धुक्का।

•

तेँ-तेँ, तेँ-तेँ चल बहियार
तोरोँ गोद्धा सिकिया झाड़
हमरोँ गोद्धा देख पहाड़
की ओकरा सेँ पैभैं पार!

•

तेल दे टडुआ, नुनु रे बढ़ुवा
तेली केँ तेलाय जाय,
नुनु केँ मोटाय जाय
तेल करेँ चुप-चुप,
नुनु करे लुप-लुप।

•

दहू भगवान गरदौआ झोंर
बकरी भागतै जैबोंं घोंर ।

•

दुलारी बेटी दूर जाय
कौआ लैकें उड़ी जाय!

•

धान कूटें धनियाँ, बैठोंं बभनियाँ
केला के चोप लें कें दौड़ें कुम्हैनियाँ।

•

नदी किनारा बड़का टिल्हा
टिल्हा ऊपर एक ठो कोठी
कोठी के आगू पत्थल-किल्ला
किल्ला बंधलोंं मैगर हाथी
हाथी के साहब पिलवान
जेकरोंं देहो छै बलवान
एक दिन बान्हन खुलिये गेल
मैगर हाथी भागी गेल
पार करलकै नद्दी-नाला
पड़लै एक पथलोंं सें पाला
बचतें-बचतें ठेंसिये गेल
पिलवान आवी थामी लेल।

•

नानी गेलौ पानी भरें
भात भेलौ गील
भात नै खैबोंं भुजा भुजी दे
भुज्जा भेलौ कुटुर-मुटुर
बहू करी दे
बहू भेलौ धुमधाम
टका फेरी दे
टका भेलौ गड़बड़
आबें बेलें पापड़ ।

•

नावोंं के पाल, मछुवा के जाल
गाड़ी के हाल, घोड़ा के नाल
गुम्मा के गाल बिन ठोकले
नै चलतौं चाल।

•

निनियाँ पुर सें निनिया ऐलौ
नानी यहाँ सें गेनरा ऐलौ ।

•

नूनू के माय कुछुए नै खाय
ऐंगन एत्तें गो रोटी खाय
पानी पियैलें पोखर जाय
पोखरी के कछुआ लेलक लुलुआय
वहाँ के पियासली कुइयाँ जाय
कुइयाँ के बेंगवा लेल लुलआय
वहाँ के पियासली गंगा जाय
गंगा माँता दिऍ आशीष
चिर युग जिऍ नूनू लाख बरीस
लाख बरिस के खुण्डा-खुण्डी
लाख बरिस के नूनू हमरोंं ।

•

नुनु के गाय चरी-बुली खाय
चरी-बुली कें घोंर आवी जाय
घर आवी कें खुट्टा बँधाय
खुट्टा बँधाय कें मटरू बोलाय
मटरू बोलाय कें दुधवा दुहाय
दुधवा दुहाय कें सोनागाछी जाय
सोनाकटोरी में दूध-भात सनाय
नुनुआँ के मौसी चुटकी बजाय
तबें तें नुनुवाँ गुपुर-गुपुर खाय।

•

नूनू के जुठ-कुट के खाय ?
बाबू खाय ।
बाबू के जुट-कूट के खाय ?
भैया खाय ।
भैया के जुठ-कूट के खाय ?
भौजी खाय ।
भौजी के जुठ-कूठ के खाय ?
कुतवा खाय ।
कुतवा के जुठ-कुठ के खाय ?
कौआ खाय ।
कौआ के जुठ-कुठ के खाय ?
धरती खाय ।

•

नुनु के बाबु गेलै पुरुवों के हाट
सोना केरों गाछ आरो रूपा केरों पात
वैमें आरो देखों—हीरा-मोती-फलिया
बाबु लैके ऐतै मिसरी के ढेलिया
आरो लैके ऐतै लालमुनिया साथ
नुनुवा नाँचतै दिन, दोपहर, रात।
नुनु के तेल माथा देल
बेटा भेल लोकी लेल
बेटी भेल सौपी देल
नुनु के दादी खुश होय गेल।

•

नूनू के माय आवों-आवों
भरी कंटरी खीर बनावों
आपने लेल्हें थार भरी
नूनू के देल्हौ कटोरा भरी
वही लें नूनू रूसल जाय
बापे-पितियें मिली बौसल जाय
बापें बौसल हाथी-घोड़ा
पितियें बौंसल दूध कटोरा ।

•

नूनू खाय दूध भत्ता,
बिलैयाँ चाटें पत्ता
चाटलें-चाटलें गेल पिछुआड़
झाँझीं कुत्ती लेल लिलुआय
वहाँ सें आयल गंगा माय
गंगा मैया दिएँ आशीष
जीयें नूनू बाबू लाख बरीस
नया घोंर उठों पुरानों घोंर खसो ।

•

नूनू माय, हे नूनू माय
नूनू कथी लें कानै छौं
अंगिया लें की टोपिया लें
दादा-दादी हज्जर लें
पितिया महज्जर लें
चाकू रे चन्न बीजू रे वन्न
खोपों बीकै छों-छों मन्न ।

•

नैहरा में कै बार गांगो
सत-सत बेरी
अॅ ससुरारी में कै बार माँगों
एके बेरी ।

•

पांड़े पड़ोकी चुटिया में तेल
पांड़े के धिया-पुता खेलें गुलेल
पांड़े ढब-ढब-ढब ।

•

पाँच फूल चित्ती कौड़ी दहीं रे उड़ाय
हे रे मंतरिया, साँप ले मंगाय

साँप गेलौ बिली में
की करवे आबें धँसना डंगाय कें।

•

पुड़िया रे पुड़िया
घीयों में चपोड़िया ।
माथ पर धुम धाम
पकड़ कनेठिया।

•

पूस के सजाय—देह देथौं कपाय
रात-दिन ओढ़ियों दू-दू दोलाय।

•

पोना पाटी, पोना पाटी
लीची-पत्ता बेला-बाटी
खाय गेलियौ तोरा,
लाल जीभ मोरा।

•

पीपरों के लकड़ी, केला के चोप
बोल रे हाथी—पोप, पोप, पोप!

•

बगुला रे बगुला धान दे
चिनिया बादाम दे
दूध में खैलैं मखाना
ओकरों हमरा दाम दे।

•

बबुआ रे बबुआ, लाल-लाल ढबुआ
आँख लाल तोरों होलौ रे बबुआ
जों-जों बबुआ कानल जाय
ताला में चाभी घूरल जाय
दादा के अरजल, दादी के बांधल
माय रों संपत लुटाव रे बबुआ!

•

बाप कहाँ गेल छौ ?
ढाका बंगाला ।
की-की लानतो ?
पूड़ी-मिठैइया ।
हमर्हौ देबे ?
नै रे भैया ।
चिकना भर-भर, चिकना भर-भर ।

•

बाबू हो भैया हो
सुगां फोकै छौं धान हो
कें मोंन ?
बीस मोंन ।
बीसू राय के बेटवा
लाला पगड़िया मथवा
भैया ऐलै घोड़ी पर
भौजी ऐलै खड़खड़िया पर
टुन-टुनमा ऐलै छितनी पर
भैया कें देलियै लोटबे पानी
भौजी कें देलियै कटोरबे पानी
टुनटुनमा कें देलियै चुकुड़बे पानी
भैया सुतलै सीरा घोंर
भौजी सुतलै भनसा घोंर
टुनटुनमा सुतलै चुलही पिछुआड़ ।

•

बाबू हो भैया हो
सुग्गा फोकै छौं धान हो
कें मोंन ?
बीस मोंन ।
बीसू राय के बेटवा
लाल पगड़िया मॅथवा
ढोल बाजे डिग्गिर बाजे
बाजे रे शहनैया

राजा बेटी धरहर नाँचै
रतन जमइया ।

•

बिरनी गे बतासो रानी
तोरों मुँह में आग-पानी
तोहें जैइयैं केलाबाड़ी
तोरों देवौ बिक्खे झाड़ी।

•

बिल्लो मौसी कहाँ जाय छैं ?
माछों मारें ।
केना मारबे ?
छुपुर छैंया ।
केना बनैवे ?
हसुआ-कचिया ।
केना धाबे ?
कठौती पानी ।
केना खैबे ?
कुटुर-मुटुर ।
केना सुतबे ?
नम्मा चौड़ा ।
केना सतभें?
फों-फों-फों ।

•

बीजू रे बन्धवा
कै चन्दवा ?
एक चन्दवा ।

•

बूढ़ा-बूढ़ी कहाँ जाय छों?
माँछो मारें।
केना मारवौ?
छप्पक-छोइर्या।
केना रिनभौ?
छुन्नर-मुन्नुर।
केना खंभौ?
चप्पर-चप्पर।
कौव्वां देखी लेलकौं कौर
नै तोरा आबें मिलथौं ठौर
डुडुम-डुडुम डुम,
डुडुम-डुडुम डुम।

•

मामू हो मामू, डोंर लागै छै
केकरों डोंर, बेटी केकरों डोंर ?
बाघ छै, बघिनियाँ छै
झुन-झुन कटोरवा खेलै छै
सिकियो नै डोलै छै
भौजी माथा पर कमलों सेनूर
भैया माथा पर कमलों के फूल
उठों हे भौजी पीन्हों पटोर
हम नै पिन्हबों भंगा पटोर
आनभौं कचिया दागभौं ठोर
गुआ-गुआ कें पोछभौं लोर ।

•

रे नूनू कथी के
अचन-पचन बेलना के
माय-बाप ससन्ना के
दादा-दादी हज्जर के
पितिया महज्जर के
हम्में खेलौनिया जाफर के
फूफू तें छेकी गुल्लर के ।

•

रौदा उग रे बभना
मुरगी देबौ चखना
बिलैया देवौ कोर
काली माँय कें दीया बारबै
सगरे ईंजोर।

•

रौदा उगों गोसांय रौदा उगों
तोरी बहुरिया जाड़ें मरें
हमरी बहुरिया रौदा सेकें।

•

रौदा छेकले बौध लागतौ
गोला बरद के पीज रोटी खैबे।

•

लुक्खी बनरिया दाल-भात खो
सैंया बोलैलकौ पटना जो।

•

सुइया हेराय गेल
खोजी दे नै तें मैया मारबे करतौ ना।

•

सुग-बुग बगिया गुब-गुब खाय
जिजा पियासलों कन्नें जाय
ससुर के गल्ली गेलै भुतलाय
करै तें लागलै हाय, हाय, हाय।

•

सुनों हो राजा, सुनों हे रानी
हमरों बित्ती वेग तुफानी
आन के गोद्धा पीयै पानी
गरम कचौड़ी, ठंडा पानी
चोट लगै तें हम नै जानी।

•

सुनरी जैती धरमपुर हाट
माय लें साड़ी, बहिनी लें चोली
पीसी लें रतनारी साड़ी
वियोग मरें नूनू के चाची
रहों-रहों चाची, धीरज बान्हों छाती
तोहरा देभौं चाची गुड़ों के चक्की।

•

सूतें-सूतें रे नूनू ओर बटना
माय गेलै कूटें पीसें, बाप खलिहान
चाचा गेलै छप्पर छारें
चाची के दुखैली कान।

•

सूतें-सूतें रे नूनू सुतौनी देबौ
दाल-भात तोहरा खबौनी देबौ।

•

सेल कबड्डी अँगना
कोठी-तर बिछौना
भैया मारै कनखी
भौजी जाय चमकी।

•

सौतारो के एक्के बात
डिग्गा-माँझर बाजै रात
सौतारो के एक्के बात
तीरो-बिज्जर साथे-साथ
सौतारो के एक्के बात
महुआ टपकै राते-रात
सौतारो के एक्के बात
गिदड़ा-गिदड़ी माँड़े-भात
सौतारो के एक्के बात
बाँस-बंसुलिया फूकै रात।

सौतारो के एक्के बात
बँहगी-सीको भूलै साथ
सौतारों के एकके बात
सौतारिन ठुमकै साथे-साथ।

•

हम्में बाबू मचोल पर
लेद्धों छौड़ा हेठ में ।

•

हरदी के दग दग
माँटी के बेसनों
हम नै जैबों
मामू के ऐंगनों
मामू के बेटी
बड़ झगड़ाही
माँगें थारी
दिऍ कढ़ाही ।

•

हा हुस रे पर्वत सुगा
हमरों खेत नै जैहियैं सुगा
मामू खेत जैहियैं सुगा
एक्के सीसों लीहें सुगा
घोंघा में भात रान्हियें
सितुआ में माँड़ पसैहियें सुगा
आपनें खैइहैं दाल-भात
बेटा-बेटी कें खिलैयैं माँड़-भात
आपनें सुतिहें मचोल पर
बेटा-बेटी कें सुतैहियैं डमखोल पर ।

•

हा हुस रे सुगना ।
तोहरा मचान पर के छौ ?
भैया छै, भौजी छै ।
की करै छौ ?
कोठी पारी बैठली छै ।
भैया मारै भौजी कें
भौजी रूसल जाय छै
घुरों हे भौजी घुरों-घुरों
पहिनों लुंगा नया पटोर
तोरों भैया बड़ा कठोर ।

■

अंगिका बुझौव्वल

आँखी तर गुजुर-गुजुर
गुजुर तर फें-फें
फें-फें तर फदर-फदर
सुनें तें कें-कें।
(आँख, नाक, मुंह, कान)

•

उजरों बिलाय, हरा पूँछ
नै जाने तें हमारा सें पूछ।
(मूली)

•

उथरों पोखर, तातों पानी
ललकी गैया पीयै पानी।
(दीया)

•

ऊपर सें गिरलै धाम-धूम
घुम्मा रे तोरों माथा सूँघ।
(ताड़)

•

एक गाँव में ऐसनों देखलां
बन्दर दुहै गाय
छाली काटी बीगी दै छै
दूध लिऍ लटकाय।
(पासी, खजूर गाछ, ताड़ी)

•

एक गाछ—मनमोहन नाम
बारह डार, बारह नाम।
(बरस, दिन, तिथि)

•

एक चिड़ैयाँ ऐसनी
खुट्टा पर बैसनी
पान खाय मुचुर-मुचुर
से चिड़ैयाँ कैसनी?
(जाँतो)

•

एक जोगी आवत देखा
रंग-रूप सिंदूर के रेखा
रोजे आवै, रोजे जाय
जीव-जंतु केकरौ नै खाय।
(सूरज)

•

एक टा फूल, छियत्तर बतिया।
(केला-खानी)

•

एक महल में दू दरवाजा
ऐलौं लटकन, मारों पटकन।
(नाक आरो नेटा)

•

एक मुट्ठी नारों
सौंसे घोर छारों।
(सिन्दूर)

•

एक मुट्ठी राय, देल छिरियाय
गिनतें-गिनतें ओरो नै पाय।
(तारा)

•

एक संग दू बाती रहै
एक चललै, एक सूती रहलै

तैइयो ओकरो साथ नै छुटलै।
(जाँतो के दोनो पल्ला)

•

करिया जीन, लाल घोड़ा
चढ़ै-उतरै सिपाही गोरा।
(तबा, आग, रोटी)

•

करिया हाथी हड़बड़ करै
दौड़ै हाथी चकमक बरै।
(बादल-बिजली)

•

काठ फरै, कठगुल्लर फरै
फरै बतीसो डार
चिड़ियाँ चुनमुन लटकै छै
मानुष फोड़ी-फोड़ी खाय।
(सुपाड़ी)

•

कार बदन मूँ उज्जर कत्तें
रावण-शीष, मंदोदरी जत्तें
हनुमान-पिता करी दें-दें
राम-पिता करी लै लें।
(गाहक दुकानदार सें पूछै छै –कलाय केना कें छै? तें दुकानदार कहै छै–रावण आरो मंदोदरी के सिर एतना, यानी एगारो सेर। फेनू गाहक कहै छै–हनुमान-पिता करी कें दौ यानी झाड़ी-फूकी कें, तें दुकानवाला कहै छै, रामपिता (दशरथ) दस सेर करी कें लै ला।)

•

कारी गाय पिछुवाड़ी ठाढ़ी।
(टीक)

•

कारी गाय लरबर
दूध करै घरबर।
(मेघ)

•

खेत में उपजै, हाट बिकावै
साधु-बरामन सब कोय खावै
नाम कहेते लागै हँस्सी
आधों गदहा, आधों खस्सी।
(खरबूजा)

•

चलै में लथपथ, बैठे में चक्का
हाथ नै गोड़, मारै लचक्का।
(साँप)

•

चलों पाँचो भाय पांडव
चरका पथलों कें पार करी दीहौ।
(अँगुरी-दाँत)

•

चलै में रिमझिम, बैठै में थक्का
चालीस घोर, पैंतालीस बच्चा।
(रेल)

•

चानी हेनों चकमक, बीच दुफक्का
जे नै जानें, ओकरों हम्मे कक्का।
(दाँत)

•

चार कबूतर चारो रं
भाँड़ी में ढुकलै एकके रं।
(पान)

•

छेकां हम्में रात रों रानी
लोर चुआबौं कानी-कानी।
(मोमबत्ती)

•

छोटकी पाठी पेट में काठी
पाठी-काठी रग्गड़ खाय
सौंसे गाँव ठो दिया जराय।
(दियासलाय)

•

छोटों-छोटों डिबिया
लाल-लाल बिबिया।
(मसूर)

•

जोंड़ नै पत्ता, की छेकों?
(अमरलत्ता)

•

जबें हम्में छेलां काँच कुमारी
तब तांय सहलौं मार
आबें हम्में पहनलौं लाल घंघरिया
अब नै सहभौं मार।
(हड़िया)

•

जबें हम्में छेलां बारी-भोरी
तब तांय पिन्हलां दोबर साड़ी
जबें हम्में होलां जोख जुआन
कपड़ा फाड़ी देखै लोग-लुआन।
(भुट्टा)

•

जोड़ा साँप लटकलों जाय
सौंसे दुनियाँ बंधलों जाय।
(रस्सी)

•

झकझक मोती, ओन्हे थार
कोय नै पावै आर-पार।
(आकाश आरो तारा)

•

टिप-टिप टिपनी कपार काहै चुरती
टाँगुर-माँगुर रात काहे बुलती?
(महुआ)

•

तनी टा छोड़ी जनम जहरी
तेकरा पिन्हला लाल घँघरी।
(मिरचाय)

•

तनी टा भाल मियाँ
बड़के ठो पुँछड़ी।
(सुइया)

•

तनी-टा मुसरी
पहाड़ तर घुसरी।
(सुइया)

•

तर खमेरी, ऊपर झंडा
जेकरों पात सहस्तर खंडा।
(ओल)

•

तोंर गदगद, ऊपर फेन
तेकरों बेटा रतन सेन।
(भात)

•

तोंर टाटी, ऊपर टाटी
बीच में नाँचौ भिजलों पाठी।
(जीभ)

•

तोरा कन गेलां
खोली कें बैठलां।
(जूता)

•

तोहरा कन गेलां
लै कें बैठलां।
(पीढ़ा)

•

तोहरा घरों में केकरों पेट चिरलों?
(गेहूँ)

•

नाथनगर जाँत बरै, दिग्घी में कुइयाँ
दरियापुर में आग लगै, खैरै में धुइयाँ।
(हुक्का)

•

नेंगड़ा घोड़ा हवा खाय
कुदकी कें छप्पर चढ़ी जाय।
(धुआँ)

•

पानी काँपै, कुइयाँ काँपै
पानी में कटोरा काँपै।
(चाँद)

•

पानी में सद्दोखिन रहै
जेकरा हाड़ नै माँस
काम करै तरुआर के
फेनु पानी में वास।
(जोंक)

•

फरै नै फूलै, खाली ढकमोंरै।
(ढिबरी)

•

फूल नै पत्ता, सोझे छड़क्का।
(पटपटी-मोथा जाति रों पौधा)

•

फूल-फूल मखचन्नों के फूल
पैहिने छिमड़ी तबें फूल।
(दियाबत्ती आरो लौ)

•

फूलै नै फरै
सूप भरी झरै।
(बोहाड़न)

•

बाप रहलै पेटों में
बेटा गेलै गया।
(आगिन आरो धुआं)

•

बाप रे बाप
ऊपर सें गिरलै बड़का चाप
घोंर भागलै दुआर दैकें
हम्में कोंन दैकें भागवै रे बाप!
(जाल-मछली)

•

भरलों पोखर में चान गरगराय।
(घी के गरम कड़ाही में पूओं)

•

भरलों पोखरी में टिटही नाँचौ।
(गरम खपड़ी के बालू पर भूजा)

•

माँटी रों घोड़ा, माँटी रों लगाम
ओकरा पर चढै खुदकु दिया जुआन।
(भात)

•

मियाँ जी दाढ़ी उजरों
मकरा नाँचौ, सूतों बढ़ै।
(ढेरा सें सुथरी बाँटवों)

•

यहाँ, वहाँ, कहाँ छों;
गोड़ दू वहाँ
पीठी पर जे नाँगड़ नाँचै,
से तमाशा कहाँ?
(तराजू के डोरी, पल्ला, डंडी पर रस्सी के मूँठ)

•

राग जानै, गाना नै जानै
गाय-बराहमन एक्को नै मानै
जों कदाचित जंगल जाय
एक हपक्कन बाघो कें खाय।
(मक्खन)

•

लाल गाय खोर खाय
जानी पीयै, मरी जाय।
(आग)

•

लाल गे ललनी, लाल तोरों जोंड़
हरिहर पत्ता, लाल तोरों फोंर।
(खमरुआ)

•

लाल हाथी उजरों सूँढ़
(गजुरलों औंकरी)

•

वन जरै, वनखंड जरै
खाड़े जोगी तप करै।
(भीत)

•

सब राजा में अजगुत रानी
दुमड़ी दैकें पीयै पानी।
(दीया)

•

साँपों हेनों ससरै
माँड़ों हेनों पसरै
सब्भे छोड़ी कें नाक कें पकड़ै।
(पोटा)

•

सब्भे गेलों हटिया
घुम्मा लटकले रहलों।
(ताला)

•

सुइया हेनों सोझों
डाँड़ा पर बोझों।
(मकय के पौधा)

•

सुइया हेनों सोझों
माथा पर बोझो।
(ताड़ गाछ)

•

सब्भे गेलों हटिया
धुम्मा रहलों बैठलों।
(कांठी)

•

हमरों राजा कें अनगिनती गाय
रात चरै दिन बेहाल जाय।

(तारा)

•

हाथ-गोड़ लकड़ी, पेट खदाहा
जे नै बूझै, ओकरों भाय गदाहा।

(नाव)

•

हिनकों सास आरो हमरी सास, दोनो माय-धी
तोहें बूझों, हम्में जाय छी।

(ससुर-तोहू)

•

हिन्नें टट्टी, हुन्नौ टट्टी
बीच में गोला पट्टी।

(जीभ)

•

हिन्नें टट्टी, हुन्नौ टट्टी, बीच में मकैइया
फरै में लदबद, खाय में मिठैया।

(सिंघाड़ा)

•

हिन्नें टट्टी, हुन्नौ टट्टी, बीच में सड़कवा
फरें लागलै काली माय, छोड़ी देलकै बन्दुकवा।

(सलाम)

•

हिन्नौ नद्दी, हुन्नौ नद्दी
बीच में हवेली
हवेली करै डगमग
माँग अघेली।

(नाव)

•

हिलै नै डोलै, बैठलों गिलै।

(कोठी)

•

हीलै डोरी, कूदै बाछा।

(डोरी-लोटा)

•

हेती टा चुकड़ी में तीन बचवा
किरिन के धाव लागलै, उड़ बचवा।

(अंडी)

•

हे बें ऐलों
हे बें गेलों।

(नजर)

■

अंगिका शब्दमौनी

अ

अंग / सोलह महाजनपद में प्रथम
अंगा / कमीज
अंगिका / अंग प्रदेश की लोकभाषा
अंगुरी / अंगुल
अंथरा / सुनसान स्थान
अँटिया / पुआल का छोटा गट्ठर
अक्खड़ / निडर
अकर-बकर / व्यर्थ
अकरमलो / अकर्मी
अकसलेल्हॉ / मूर्ख
अकारथ / बेकार
अखम्मर / दीर्घजीवी
अगड़म-बगड़म/ अवांछित चीजों का जुटाव
अगोर / अग्रिम
अघैलॉ / संतुष्ट
अचक्के / अचानक
अछीनॉ / जो जुठाया न गया हो
अताय / अति करनेवाला
अथार / खेत में पड़ी फसल
अधक्की / अधिक खानेवाला
अधरा / चारा
आँतर / खेत का जोता गया एक अंश
अकटा / गेहूँ-जौ के खेत में उग आई घास
अकरा / चारा
अखरा / बिना साफ हुये चावल
अगता / पहले आनेवाला
अगुआ / कोई कार्य करनेवाला पहला आदमी
अगोरवॉ / प्रतीक्षा करना, रखवाली करना
अजगुत / विचित्र
अड़गड़ा / अवारा पशु को बांधने की जगह
अतर / इत्र
अतिकाल / समय का बीत जाना
अथाह / जिसकी गहराई का पता न चले
अन्हार / अंधेरा
अदहन / चावल पकाने के लिए उबला जल
अधक्की / अधिक खानेवाला
अनकट्टॉ / बिना सोच के बात
अनकिरतो/ अवांछित
अनटेटलॉ / अवांछित
अनठियैवॉ / नजरअंदाज करना
अथार / सूखने के लिए पड़े अनाज
अनखनो / नाराज
अनजोखलो / बिना नापा हुआ
अनधुन / अंधाधुंध
अनपट्टॉ / बहुत अधिक
अनभुआर / अपरिचित
अनसेधरॉ / घृणा पैदा करने वाला
अनसॉ / अप्रिय
अपसुऑ / पूर्ण युवती
अपैतॉ / अपवित्र
अफरा / बैल के पैर फूलने का रोग
अबेर / देर
अमरो / अमृत
अरगासन / देवता आदि के लिए छोड़ा गया अन्न
अरजल / अर्जित
अरमरैवॉ / मरनासन्न स्थिति में होना

अररा / किनारा
अरही / घना वन
अलयैलों (असनैलों) / बेस्वाद, बासी
असलान / स्नान
अशीख / आशीष
अहिवात / सौभाग्य

आ

आखर / अक्षर
आधन / भात के लिए खौलता पानी

इ

इमरोतिया / कान का आभूषण
इसर / ईश्वर
इस्स / उपेक्षा-भाव के प्रदर्शन हेतु शब्द

ई

ईंजोर / प्रकाश
ईंटौरा / ईंट का टुकड़ा

उ

उखठ / जलविहीन खेत
उखरी / ओखल
उखारी / गन्ने का खेत
उखेबा / पंखा
उगरास / मोक्ष
उघारलों / खुला हुआ
उस्सट / उदास
उड़वी / पर पुरुष के साथ भागनेवाली स्त्री
उताहू / उतावला
उदेस / खोज
उधियैवों / उबलना
उपटवो / सीमा से बाहर
उपास / उपवास
उलाँक / बड़ी नाव जिसका एक सिरा ऊँचा हो
उलार / ऊपर आना
उसना / उबाले धान का चावल
उहा (वहा) / वही

ए

एकबग्घों / एक ओर झुका हुआ
एकोसी / एक ओर झुका हुआ
एतिगोड़ी / इतनी बड़ी
एंड़ / पैर का पिछला हिस्सा
ऐन्ठा / ऐठां / यहाँ पर
ऐठों / जूठन की सफाई
ऐन्हों / ऐसा
ऐभाती / अहिवाती / सौभाग्यवती

ओ

ओछाय / बिछा कर
ओखद / औषध
ओठंगलो / किसी चीज का सहारा लिए
ओढ़िया / डाला
ओत्तें / उतना
ओय में / उसमें
ओरी / आगे
ओरे-ओरे / किनारे-किनारे
ओलती (ओरी) / छप्पर का किनारा
ओहार / पर्दा
ओहारी / छप्पर का किनारा
औंटवों / खौलाना

औंठी-पौंठी / अगल-बगल
औसरा / बरामदा

क

कंचा (नवतुरिया) / नवयुवक
कंतरी / दही जमाने का बर्त्तन
ककरा / किसको
कटमटों / कमी, कठिनाई
कटाहा / काटनेवाला
कट्ठर / कठोर
कठैला / कटहल
कतरी / धान का रोग, लोहे की पतली चूड़ी
कत्तें / कितना
कथी के / किस चीज का
कनसुओं / छुप कर सुनना
कनिको / थोड़ा भी
कनियैन / दुल्हिन
करची / बाँस की टहनी
कलसों / कलश
कलव्वों / भोर या दोपहर का भोजन
कस्सों / कसैला
कसैन्नी / काँसे के स्वाद का
कहिनें / क्यों
कहिया / कब
काता / किनारा
कासों / होठ का किनारा
कादो / कीचड़
किनवों / खरीदना
किल्ला / बाँस का बना खूँटा
कुटमैती / संबंध जोड़ना
कुट्ठों / कठोर
कुरखेत / जोता-तोड़ा हुआ खेत
कुलबोरना / कुलनाशक
के / कौन
केकरा / किसको
केना / कैसे
केनुली / केला
केरा / केला
कै / कितना, वमन
कैक / कितने ही
कैन्हें / क्यों
कोंटा / कमरे का कोना
कोकसिझुवो / अधपका
कोय्या / कुढ़िया
कोर / किनारा
कौर / मुँह में एक बार का अन्न
कूरी / किसी चीज का भाग

ख

खंपड़ाहा / खंपड़ाही / गाली
खखरी / चूल / बिना अन्न का धान
खटिक / सब्जी बेचकर जीविका चलानेवाला
खतरस / षटरस
खनखनाहा / रूखा स्वभाव
खनखनों / कुरकुरा
खपड़ी / मिट्टी का एक बर्तन
खापों / गड्ढा
खबौनी / गेहूँ से बना मीठा पकवान
खम्मा / खंभा
खरिहान / खलिहान
खसवो / गिरना
खाँटी / शुद्ध

खिच्चा / जो पका न हो
खुजैवों / रौंदना
खुदबुदी / औतसुक्य
खुद्दी / टूटा हुआ चावल
खूँट / साड़ी का किनारा
खूट / मवेशी का नाखुन
खेखरों / चूल
खोचा / मुड़ा हुआ आँचल
खोता / घोसला
खोपों / केश को गोलकर बाँधना
खोरना / आग को उलटने की छड़ी

ग

गँड़ासी / पुआल काटने का एक औजार
गजुरवो / अँकुरना
गस्सा / मुंह में जानेवाला बड़ा कौर
गहवर / देवस्थान
गहागही / चममक
गहिली / एक लोकदेवी
गहुम / गेहूँ
गाँही / पाँच की राशि
गिरथैन / गृहस्थी
गुअवा (गुआ) / कसेली
गुजगुजिया / घना
गुम्मा / चुप रहनेवाला
गुस्ती / वंश, कुल
गेंठ (गेठी) / गाँठ
गेना / गेंदा फूल
गोछियैलों / समेट कर रखना
गोड़ / पैर
गोड़ैवा / रखवाला
गोतनी / पति के भाई की पत्नी
गोतिहर / गोतिया का घर
गोरथारी / पैर के समीप
गोहरा-गोहरी / शोरगुल
गौढ़ा / गाँव से सटे खेत की जमीन

घ

घरैतिन / कुलवधु
घाम / पसीना
घुरमैतें / घूमते या घुमड़ते हुए
घोघों / घूँघट
घोरवों / घोलना
घोलटवों / लुढ़कना
घैलसरों / घड़ा रखने का स्थल

च

चड़िया / खपड़ी
चतरलों / फैला हुआ
चनचन / बहुत चेज
चभकोर कें / हिलकोरना
चहेरिया / नाविक
चिकसों / आटा
चिन्हवों / पहचानना
चिपरी / गोबर के सूखे टुकड़े
चिरिंग / बिजली की छटक
चिलका / कम उम्र का बच्चा
चुकुमुकु / टांगों को बाँहो में समेट कर बैठना
चुटकी / अंगुठा और तर्जनी के सटने के बीच का स्थान
चुमावनों / दही, हल्दी आदि से तिलक करना
चुरकी / जुल्फी

चुरु / चुल्लू
चेपों / मिट्टी का बड़ा ढेला
चोइयाँ / मधली के छोटे सटे पंख
चोखों / तेज
चोचा / शिशु पाखी
चेथरी / फटा-चिटा कपड़ा
चेल्हवा / छोटी लकड़ी
चेहाय / चौक कर
चौका / मंगल कार्य के लिए बना चबूतरा
चौखंडी / चार खंड का बंगला
चौपरिया / वह मकान जो चारो तरफ से बना हो और बीच में खुला स्थान
चौबटिया / चौराहा

छ

छंगुनी (कुंगुरिया) / कनिष्ठ अंगुली
छकड़ा / बैलगाड़ी
छगुनवों / चिंता करना
छटका / चमक
छपरी / छप्पर
छरकवों / छिटकना
छलामली / झलमल
छिनरो / चरित्रहीन
छियौं (छौं) / हूँ
छीकों / सिकहर
छुच्छों / सिर्फ
छुछुऐवों / व्यर्थ घूमना
छुतहरा / बुरा व्यक्ति
छुलछुल / दिखावे की क्रिया
छेकै / है
छेववों / काटना
छौड़ी / कम उम्र की बच्ची

ज

जों / अगर
जकतां (जकां) / जैसा
जतन / यत्न
जनु / नहीं
जीरी / फल का एकदम छोटा रूप
जीवछ / जीवात्मा
जुमवों / पहुँचना
जोखें / समान, जैसा
जौरों / झुंड

झ

झखवों / बड़बड़ाना
झट दें / जल्दी से
झपंटी / ढक्कन
झपरलों / फैला हुआ
झमान / चिंतित
झड़ी / लगातार
झाँस / तेज गंध
झाँटों / डाली आदि की चोट
झांपी / ढक्कन
झिटकी / कंकड़ी
झोर / मसालेदार रस
भोरवों / झकझोरना

ट

टटका / ताजा
टनकों / तेज
टहलुआ / सेवक
टापेटुप / पूर्ण
टाल / किसी चीज का ढेर

टिकोला / आम का कच्चा छोटा रूप
टिटही / पानी के किनारे रहनेवाली चिड़िया
टुघरवों / लुढ़कना
टेटनों / सर का फूला अंश

ठ

ठट्ठा / मजाक
ठनका / आकाशीय बिजली
ठनकों / न कच्चा, न पक्का
ठेंसवों / ठोकर लगना
ठाँसवों / अधिक खाना
ठाढ़ों / खड़ा
ठामे ठियां / नजदीक में ही
ठुनकवों / मचलना
ठुर-ठुर / गोल-मटोल
ठेकवों / छू जाना
ठोपों / बूंद

ड

डाँड़ों / कमर
डुमरी / गूलर
डेढ़िया / दरवाजे का फाटक

ढ

ढलेल / बेवकूफ
ढार / गिरना का संज्ञा रूप
ढुकवों / प्रवेश करना
ढेंगरैवों / अधिक संख्या में
ढिन्नों / पेट
ढेकी / चावल कूटने का घरेलू औजार
ढेरी / अधिक
ढेव / लहर

त

तमरुआ / काँसे का बर्त्तन
तरें / नीचे
तही तर / उसके नीचे
तियोन / तरकारी
तिसिया-मिसिया / विवाह में कन्या के माथे पर रखा जानेवाला सिन्दूर
तैयो / तब भी
तों / तुम

थ

थान / स्थान
थारी / थाली

द

दँतार / दाँतवाला हाथी
दगदग / सफेद
दगरिन / प्रसव क्रिया में सहायक स्त्री
दरपवों / उदार होना
ददिहर / दादी का घर
दहो दिस / दशो दिशाएं
दिस / दिशा
दीयट / दीपक रखने का आधार
दुबड़ी / घास
दूजीवियों / गर्भवती
दूसवों / शिकायत करना

ध

धधैवों / इतराना

धनारी / धंधा
धमस / तेज आहट
धमार / उछल-कूद
धानि / पत्नी
धामर / धूल धुसरित
धारी / रेखा
धिपलों / गर्म
धीमाठो / सुस्त
धुवैन्नों / धुएं की गंध-सा

न

नाँखी / सदृश्य
नाँगटों / नंगा
नाँढों / नंगा
नगीच / नजदीक
नछतरी / सौभाग्यवती
नठिनी / छटी हुई
नढ़िया / खाली
नरेठी / कंठ की नली
नवेरिया / मल्लाह
नहरी / नम्रता से
नान्हो / छोटा
निचिंत / निश्चिन्त
निछलों / कबूला हुआ
निनान / दुर्गति
निपत्ता / पत्रहीन
निभोर / संज्ञाशून्य
निम्मर / कमजोर
निस्तार / समाप्त होना
निसुऐवो / एकदम मलिन पड़ना
नुकैवों / छिपना
नेतों / निमंत्रण
नोंन / नमक
नौड़ी / सेविका

प

पंगत / पंक्ति
पंचकाठ / अंत्येष्ठि की अंतिम क्रिया
पंजराठी / छाती की हड्डी
पघा / बाँधने की डोरी
पछियरिया / पश्चिम का
पछुवैवो / पीछा करना
पछौटा / दुपट्टा
पझैलों / बुझा हुआ
पटैलों / आराम की स्थिति में
पटोर / रेशमी कपड़ा
पतियैवों / विश्वास करना
पतिसलवा / लखपति
पथार / समूह
पनखोकों / छाती के दायें-बायें की जगह
पनगरों / जलयुक्त
पनछाहा / पानी जैसा
परघरिया / दूसरे घर का
पनभरा / पानी भरनेवाला
पनसोखा / इन्द्रधनुष
पनियार / प्रण पालनेवाला
परकट्ठों / लकड़ी का टुकड़ा
परकवों / चस्का लगना
परछत्ती / चहरदिवारी
परवैतिन / पर्व करनेवाली
पराँट / परती जमीन
पराछित / प्रायश्चित
पराय / छोड़ जाना
परेख / आभास

परोजन / प्रयोजन
पसर / एक नाप (हथेली भर)
पसनी / एक किस्म की खुरपी
पाड़ / साड़ी का किनारा
पितियाइन / चाची
पितियों / चाचा
पिन्हवों / पहनना
पुगहर / द्वार का जल-पत्रयुक्त कलश
पुछारी / पूछताछ
पुबटिया / पूर्व दिशा का
पुरलों / पूर्ण
पुरहैत / पुरोहित
पुरैन / कमल
पुरैनी / पुरैन का पत्ता
पैनों / बैल को हाँकने की छड़ी
पेसलों / घुसा हुआ
पौढ़ल / लेटे हुए

फ

फनन / फंदा
फरक / अलग
फरकी / बाँस का टटिया
फरछों (भिहान) सवेरा
फुजलै / फूल गया
फेंड़ों / जड़ का उभरा ऊपरी भाग
फेनु / फिर
फोकरन्नी / बासी फटे दूध की गंध

ब

बझैलकै / फसाया
बतास / हवा
बनतपसी (वनतपसी) / वनदेवी
बनिजरिवा / व्यापारी
बन्नी / दुल्हिन
बन्ने / दुल्हा
बरू (बलुक) / बल्कि
बसोवासी / बसने लायक जमीन
बहरैवों / बाहर होना
बाउर (बौरों) / पागल
बिचकाठी / विचित्र
बियैवों / पैदा करना
बिदकरी / विवाह में रस्म निभानेवाली
बिंडोवो / तूफान
बिनियाँ / पंखा
बिरोग / विरक्ति
बिलभों / बाँटना
बिलमलै / ठहर गया
बिलामों / भैंसा
बीगवों / फेंकना
बुच्चों / बौना
बुलवो / चलना
बेमत / पागल
बेरथ / व्यर्थ
बेसाइल / खरीदना
बौसवो / मनाना
बोंगों / गूंगा

भ

भंख / सन्नाटा
भंगा / टूटा हुआ
भंसियैवों / बहते जाना
भकचकी / चकाचौंध
भकभक / तेज प्रकाश
भनसा / रसोईघर

भरगर / भरा-पूरा
भवौ / अनुज-बधु
भाँगटों / बखेड़ा
भाँसों / कूड़ा-कर्कट
भिंजा / भीगा
भीती (भीत) / दीवार
भुँइयाँ / धरती
भुटकुरवो / सिहरना
भुट्टा / मकई
भुरकी / छेद
भोकरवों / जोर से रोना
भैसुर / दुल्हे का बड़ा भाई

म

मुंसा / मर्द
मटियैवों / मिट्टी से साफ करना
मरोछ / जिसकी संतान न बचे
मेंरैहो / खोजना
मोकनी / जिस हाथी के दाँत न निकले हों
मौगी / जनानी
मौहुर / जहर
मौली रहै / झूमना

र

रंथ / रथ
रंथी / अर्थी
रखनी / रखैल
रत-रत / एकदम लाल
रगेदवो / दौड़ाना
रन-रन / दनादन
रसें-रसें / धीरे-धीरे
रहनिहार / रहनेवाला
राँड़ / विधवा
रान्हवों / भोजन बनाना
रिक्खी / गिलहरी
रिची-रिची / सजा-सँवार कर

ल

लड़कोरिया / नये शिशु को जन्म देनेवाली
लपची / सिर के बालों का गुच्छा
लरपच / लचीला
लहलह / हरा-भरा
लाड़ो / दुल्हिन
लिरबुधिया (निरबुधिया) / अबोध
लिहारी / निहार कर
लोकवेद / लोग सब
लुथनी / ढेर
लूर / ज्ञान
लोहैन्नी / लोहे के स्वाद का

स

संघरबों / धीरे-धीरे जमा होना
सँझकी / संध्या समय
सँझली / मँझली के बाद
सखरी / जूठा
सचकुरुओं / सत्य
सगरो / सब जगह
सटकुनी / छोटी छड़ी
सतबरती / पतिव्रता
सत माय / सौतेली मां (इसी तरह
सतबेटी-सतबेटा शब्द बनते हैं)
सन / सदृश्य
सपसपैवों / खुजलाना
सरपोस / घड़े का ढक्कन

सवासिन / वह लड़की जिसकी शादी हो चुकी हो
समदवों / मनाना
सरंग / आकाश
सलखियो / सुहेली
ससरफन्नी / हल्की गाँठ
साँय / स्वामी
साइत (शायत) / शायद
सामल / श्याम रंग
सालुक / लाल कपड़ा
सिट्ठी / सारहीन
सिनौरा / सिंदूरपात्र
सिम्मर / सेमल
सीथी / माँग
सुखड़ा / दुबला-पतला
सुच्चों / शुद्ध
सुटियैवों / डर से छिपना
सुसुरमुँहां / सीधा होने का अभिनय
सुबही / सौभाग्यवती
सेदल / सेका हुआ
सेंरैवों / ठंडा होना
सेवाती / स्वाति नक्षत्र
सोन्हों / सुगंधित-मीठा
सोंर / समतल
सोवरन / स्वर्णमय
साहदा / बिगड़ैल स्वभाव का

ह

हँकारों / आमंत्रण
हॅसोतवों / हथियाना
हकनवों / खूब रोना
हट्टो हट्टो / बौवाना
हड़ाशंख / गाली
हदरजीहा / लालची
हदियैवों / घबराना
हबर-हबर / जल्दी-जल्दी
हरकट / एकदम
हरखित / हर्षित
हरजाई / कुलटा
हरमुट्ठों / जिद्दी
हरी-घुरी / बार-बार
हरदियानो / हल्दी के रंग का
हलफलैलों / खिला हुआ
हाली-ताली / जल्दी-जल्दी
हाही / अधिक की इच्छा
हिंगरैली / लाल रंग से रंगी
हितबन / हितेषी
हियाव / साहस
हिसकों / आदत
हुकरवों / बिछुड़ने पर रोना
हुच्चों / हलचल
हुड़का / किल्ली
हूक / दर्द
हुलकवों / देखना
हूरवो / घुसेड़ना
हेट / जमीन
हेमाल / शीतल
हेलवों / तैरना
होरहा / भुना अनाज
होरिला / बच्चा
हौलदिल / घबड़ाहट

■

अंगिका कहवी (लोकोक्ति)

- अंगा नै टोपी—सिपहिया नाम
- अंधरी गाय के धरम भगवाने रखवैया
- आँख बंद डिबिया गायब
- अकेलों मियाँ कानतों कि कब्बड़ खानतों
- अगहन ऐलौ, राढ़ मोटैलौ
- अगहनों में मुसाहो कें सात बहू
- अघन के झरिया दोबर
  माघ के झरिया गोबर
- अघैलों मचली के पोठियो तित्तों
- अदन-पदन के डरे नै छै
  जेकरों डोंर ऊ घरे नै छै
- अजनासें देखलकै विनरावन
- अनमनों बीहा, कनपट्टी सिनूर
- अनकर चुक्का अनकर घी, पांड़े बाप के लागलै की
- अन्हरा के जागले की, सुतले की
- अन्हरा चाहै दोनो आँख
- अनहिसका के चंदन, कपार चरचरावै
- अपनों बढ़ाय कुतबो करै छै, टाँग उठाय कें मुतवो करै छै
- अमीरो के बिगाड़लों गाँव
  आरो बापों के बिगाड़लों बेटा, कहीं सुधरै छै
- आँते तित्तों, दाँते नोन, पेट भरियों तीने कोन
- आगरी बहुरिया कटहल नै खाय
  मोचा ले पिछवाड़ी जाय
- आगु नाथ नै पीछू पगहा
- आपन पूत परापत घोड़ा
  नै कुछु तें थोड़म थोड़ा

- आपनों गूरो कले कले हूरो
- आपनों बढाय कुतबो करै
  टाँग उठाय के मुतबो करै।
- आपनों मन के मौजी, माय के कहलको भौजी
- आपनों हारलों बहुओं के मारलों के कहै छै
- आप रूप भोजन, पर रूप सिंगार
- आयकों बनिया कलकों सेठ
- आय-माय के ठोप नै, बिलाय-माय मनभरा
- ऊपरी के लागै पिपरी
- ओखरी में माथों तें समाटों के की डोंर
- औकतैलों कुम्हार लकड़ी सें खाने माँटी
- एक गाछ हरों, सौंसे गाँव खोंकी
- एक बेटा के माय ठकुरी, सात बेटा के माय कुकरी
- एहनो घसकट्टा के केहनो कमलगट्टा
- ऐलै भैया बिसरोटिया
  नै बहिन, दू दाव पाँच-पाँच
- एक दाफी दस, एक कटोरा दाल, बहिन ओकरै मे बस
- कदुआ पर सितुवो चोखो।
- करनी नै धरनी-छेरनी
- करलो-धरलो धाय के, नाम भौजाय के
- काठो के हड़िया एक्के दाफी
- कानी गाय के अलगे बथान
- कालको लठैत, आयको डकैत।
- कुछ करनी कुछ करम गति कुछ भावी के बात
- कुटनी घोर चल्लो जैती
  सास-पतोहू एकके होतै
- कुत्ता से हरवाही
- कुल आरो कपड़ा-जोगथैं भलो

- कौआ भंडारी, सब्भे पत्ता गुए गू
- खसलो छी, रुसलो छी
  बूटो खेतो मे बैठलो छी
- खसिया के जान जाय
  खवैया के सवादे नै
- खस्सी मारी घरवैया खाय, जब्भे लेली पाहुन जाय
- खाय के ठिकाने नै, नहाय के सबेरा
- खाय के पसरियो
  मारी के ससरियो
- खाय-पीयै मे हबर - हबर
  सासु से पुतोहे जबर।
- खैवो नाना के, कहैवो दादा के
- खोटा ले मू ते हेलाव
- गाँड़ दाबला से कही सूल रुकै छै
- गप्पी मारलको बेंग
  छो-छो पसेरी हे एकके टेंग
- गरजू न्यातियाँ तेल दैके नाँचौ
- गहुमो साथे घुनो पिसाय छै
- गाय निगलवो
- गिरदस्थ गेलो घोर
  दायां-बायां होर
- गैयो हों, बरदो हों
- गोनु के गाय, नै बलाय
- गेलां ते बुनै ले, बिसुआ करले ऐला
- घरो में बीहा, साढू के बरियाती
- घोर के जोगी जोगड़ा, आन गाँव रो सिद्ध
- घोट मे भूजी भांग नै, ड्योढ़ी पर नाच
- चंदन गाछी मे डरकाग लगलो छै

- चट लगन, पट बीहा
- चरै ले गेलौं, चोथैले ऐलौं
- चार दाँतो के बाछा
- चालनी दूसे सूपो के
  जैमे आपने बहत्तर भूर
- चिलका भागें चिलकौरी जियै छै
- चूल नै छट्ठा मौसरी दाली मे इमली के खट्टा
- चोरें लै गेलै पोटरी तें बोझों होलों हौलकों
- चोरें सुने घरमो के कथा
- चोरो के धियान पोटरिये पर
- जाँतो, जंडो आरो मचान
  भादवो मे राखै तीनोपरान
- जखनी भाय-भाय, तखनिये ठांय-ठांय
- जत्ते कि कीर्त्तन नै, ओत्ते हरिबोल
- जनम भर सेवलौं काशी
  मरै वक्ती मगह रो वासी
- जब तां य कहभौ बाबू-बाबू
  तब तांय रहथौं अपनो काबू
- जबे नाँचन्है छै, ते घोघो की
- जहाँ के तोहें छो लपको-झपको
  वहैं के हम्मे डरकाग
- जहाँ गाछ-बिरिछ नै, वहाँ रेंड़ प्रधान
- जहाँ गेलो लाड़ो रानी, वही पड़े पत्थल-पानी
- जादा मछली देखी के बगुला आन्हरो
- जाने जो, जाने जाँतो
- जेकरो माय पूओ पकावे,
  ओकरे धिया ललावे
- जेकरो माय मरलै, ओकरे पत्ता अन्न नै

- जैभो मोरंग, ते कपारो साथे जैतै
- जेकरो लाठी ओकरे भैंस
- जेहनो देवता, होने पूजा
- जेहे देभौ अंगे सेहे जैथौं संगे
- जोर-जमाय, भैगना, तीनो मै आपनो
- झटपट के घानी, आधो घी आधो पानी
- झरकलो मुंह भाँपले निक्को
- डायनी के नजर ढकनी पर
- डोली नै कहार, खोपो बान्ही के तैयार
- ढेर मरद मे बरद उपास
  ढेर जनानी, मरद उपास।
- देर होशियार तीन दाफी माँखै
- ढेलफेक्का गोसाँच
- तों कुलबोरना तीन तियौन
  नोन, तेल, मिरचाय
  हम कुलवंती छुच्छे खाय छी-दूध, दही, मलाय
- तीन कनोजिया, तेरह चुल्हा
- तीन मे नै, नै तेरह मे
- तोहें मरो अलबता, हम्मे करवौं पुसभत्ता
- थूकी के चाटवो
- थूको से सत्तू सानवो
- दाल भात पर चटनी, बहुओ पर रखनी
- दाल-भात में मूसलचंद
- दिन खाय राती झक्खै, ओकरा कौने साथे रक्खै
- दिनो मेघ राती तारा, होवे करतै अबकी मारा
- घरो मे भोज भेल, कुत्ता जी लुलु वैले गेल
- देखले घोर बिहेले बर, कोठी तोर बिछौना कर
- देखले छौड़ी समधिन

- देखै मे घाम-घूम, कामो मे कोढ़ी
- देखले छेलै लाय नै, देखै छै मिठाय
- देहो मे दम नै दिवाली मे धक्का
- दोसरा के गूरो समाट लै के हूरो
- धने धरावे तीन नाम-फजला, फजलू, फजल इमाम
- धिया जनमैनो, मांझरी होवो
- धिया-पूता केकरो, घीढारी करे मोबरो
- धी, जमाय, भैगना, तीनो नै हुए अपनो
- धुआँ रो पहाड़ कत्ते देर
- धोबी पर धोबी, गेनरा मे साबुन
- नाँच गे मैना भतारें देतो ऐना
- नाग मरलै ते ढोड़वा के टिक्का
- न बासी बचे, नै कुत्ता खाय
- नै रहतै बाँस, नै बाजतै बाँसुरी
- नैहरा के अल्हड़ ससुरारी के ढीठ, राह चलते नै झाँपै पीठ
- नैहरा जो बेटी ससुरा जो, बेनियाँ डोलैले जो
- परो के धोन खो रे मोन
- पहिने भीतर, तबे देवता-पित्तर
- पुराने चौर के पथ पड़ै छै
- पूछे नै ताछे, मोर नाम सुहानो
- पुसो के खेती, नद्दी के रेती
- पूत खातिर गेलां, भतार गँवाय के ऐला
- पेट भेलो भारी, खटिया दे पारी
- पेटो मे खोर नै मुँहो मे पान
- पैसा नै कौड़ी, बीच बाआर में दौड़ा-दौड़ी
- फरले गाछ झुकै छै
- फाटलो रेशमी तहियो जीतांबर
- फूले नै फरै दक्मूरा गाछ

- फेनु गोनू घरे मे
- बाँझो घरो मे बिलाय पियारो
- बाँटलो भाय-पड़ोसी नाँखी
- बड़का घोर जैयो, ईंटा ढोय मरियो
- बड़-बड़ घोडी भाँसलो जाय
  लदनी पूछै कत्ते पानी
- बरी पीछू झोर
- बनैला पर बरियो के टाँग होय छै
- बरो के भाय, कनियेइयो के भाय
- बरोबरी नै बरोबरी, ओखरी चढ़ी ठाढ़ो
- बरे बुढलेल्हो ते दहेज के लेते
- बहै बैल हाँफै कुत्ता
- बाट गेलो बटोही, घर ऐलो अतिथि
- बानी से भेलां रानी
- बाबू भैया जाड़ मरै, गिदड़ा बान्है गाँती
  बैंगनी के कहै टेंगनी
- बाढ़े पूत पिता के धरमे
  खेती उपजै आपने करमे
- बाप जनम नै खैलां पान
  दाँत निपोरतै गेलो परान
- बाप-बेटा पंच, बरदा के दाम पाँच टका
- बाप-माय कुटौनो-पिसनो
- बापो के पूत परापत छोड़ा
  नै कुछु ते थोड़म थोड़ा
- बाल नै बच्चा नींद पड़े अच्छा
  बेटा रो नाम दुर्गादास
- बाबा रो कोठारी, धिया के उपास
- बिच्छु मंतर जाने नै—साँप पेटारी हाथ

- बिना चाह के नौकरी, बिना सुपारी पान
  बिना मरद के तिरिया - तीनो एक समान
- बीहा राती कोढ़ो रोपवो
- बुढ़ारी मे फलारी
- बुढिया के मरै के डोर नै, परकै के डोर
- बूढ़ी वेश्या तपस्विनी
- बूढ़ों बोर कले-कले घोट
- बेटा-बेटी केकरो, घीढारी करे लबरो
- बेटी-धनो ले, मानो ले, आँखी के कनैयो ले
- बेटी आरो धरती कहीं परती रहै छै
- लेल्हो के मौगी सौंसे गॉव के भौजाय
- बैठलो छी खाट पर, टाँग दोनो टाट पर
- बैठलो बतियाँ की करे,
  ई कोठी के धान ऊ कोठी मे, ऊ कोठी के ई कोठी मे
- भर गर देवर, भैसुरो से ठट्ठा
- भरी घोर दियोर भैसुरो से ठट्ठा
- भल पिया रहतौ, ते गुदड़ी पर सुहै तौ
- भला लोग जाड़ा मरै, गीदड़े बाँधै गाँती
- भला संग रहियो, खैइयो मुख पान,
  बुरा संग रहियो कटेहियो दोनो कान
- भीम रो लड़ाय भोरम भोर
- भूख मरै ते सत्तू खाय
  मरलो बहू के नैहरा जाय
- भैंसी के सिंग गाय मे
  गाय के सींग भैंसी मे
- भेल बीहा मोर करवे की
- भोजों घरों में कौआ भंडारी
  हर पत्ता पर गुए-गू

- मँगनी के चंदन, घिस रे रघुनंदन
- मरखन्नी सास कपारे लात
- मरौ माय जियौ मौसी
  आधो रात खियावै बौसी
- माँधी पोछला से कहीं घी निकलै छै
- माथा लेलौं टोकरी ते कथी ले नौकरी
- मार खाय पीठी, कानै आँख
- मार डरो से भूतो भागै
- मुर्गा नै बोलतै, ते भोर नै होतै
- मौगमुंहो मरद, घरमुँहो बरद
- यही गाँव मे रहना छै, होजी हों जी करना छै
- राकसो घरो मे नोन कलुव्वो
- रानियो - पानियो कहीं छुतावै छै
- राम नाम मे आलसी भोजन ले तैयार
- रोटी करलौं, पीठा करलौं भाति बरोबर नै काका करलौं
- वेश्या रुसलै घरमे बचलै
- लंका में सब बावने हाथ
- लंगड़ा रे घोड़ा चढ़वे, एक टाँग आगुवे
- लतमरा गोसॉय
- लबरो पडियैंन, खोचा में अजमायन
- लसको कनियैन, ठसको बोर
- लाठी हाथो के, भाय साथो के
- लुच्चा के मरन माघे मे
- शंख ते बाजै के बजवे करते, पंडित जी के भोमाय के बाजतै
- सब के सब धंधा, लाड़ो के भतारे
- सराहुल बहुरिया केकरो कन जाय
- ससुराल डलिया ते नहिरो डलिया
- साँय के लहर सौतनी पर

- साँय-बहु सामतो आरो गॉमो के लोग उमतो
- साँयो मीट्ठो—बेटवो मीट्ठो, किरिया केकरो खाँव
- सात बेटा राम के, एक्को नै काम के
- सात सेर के सात पकैलियै, चौदह सेर के एक्के
  तो कुलबोरना सातो खैलैं, हम कुलवंती एक्के
- सात सालो पर साँय कहलको पत्नी ते भाग लौटलो
- सातो साड़ी सहोदरी लांगटी
- सावन मे जनमलो, भादो मे कहै कत्ते पानी
- सास नै ननद घोर अपन्है आनंद
- सिहकी बुढ़िया पालकी पर बोरसी
- सुअरी के गू, नै नीपै लायक नै पोते लायक
- सूख-सूख रे खखरी, ननद ऐलो छै भुखली
  आय सुखियैं काल सुखियैं, परसू होतौ खवा खवी
- सूप इसलको चालनी के
- सूमो के धोन शैतानें खाय
- हथिया के झोर धान करे घोर
- हथिया घूमै गामे गाम, जेकरो हथिया ओकरे नाम
- हम्मे सुन्नर, पिया सुन्नर, आन गाँव के बनरी- बानर
- हाथ सुखलो बाबा जी भुखलो
- हाथी पोसो कि दामाद—बात बरोबरे
- हाथो मे अगुआ, सीथी सिनूर
- हिलावो नै डुलावो, बैठलो-बैठलो गिलावो
- हींग नै फिटकरी—रंग चोखो
- है दरवे ते सरवे, जे चाहौं से करवै
- होशियार बगरो, चुल्हा पर खोता।

■

अंगिका-छन्द-विवेचन

बयार

मात्रिक जाति के ई चौपदी छन्द में पैहिलों, दुसरों आरो चौथों चरण में मात्रा-भार-कल के समानता मिलै छै यानी कि २०-२० मात्रा वाला प्रत्येक चरण में मात्रा के रूप आरो कल यै तरह सें रहै छै—एक चतुष्कल—(।।ऽ या ऽऽ), दू पंचकल (।ऽऽ - ।ऽऽ), एक षटकल (।ऽ।ऽ) । तेसरों चरण में एक चतुष्कल (ऽऽ) आरो एक षट्कल (ऽऽऽ) के क्रम सें दू बार आवृति होय छै, यै तरह सें तेसरों चरण में मात्रा के कुल संख्या २० होय छै । तेसरों चरण में १०-१० मात्रा पर यति पड़ै छै । उदाहरण,

लगनी चिरैया लगन ले लें जाय रे
केला के पत्ता हवा में लहराय रे
बाबा हाँसै छै, चाचा हाँसै छै
बेटी वियाहे में बाप मुरझाय रे'

- रेखांकित अक्षर में मात्रा के भार ह्रस्व रूपों में छै ।
- दुसरों चरण में रेखांकित 'ह' के उच्चारण भारविहीन जकां छै ।

सवासिन

झूमर वर्ग रों ई तिनपदी छन्द आपनों दुसरों आरो तेसरों चरण में मात्रा आरो कल के समानता लेतें २२-२२ मात्रा के चरण वाला होय छै, कल के रूप आरो मात्रा के भार हेना कें होय छै—एक पंचकल (।ऽऽ या ।।।ऽ), दू चतुष्कल (ऽऽ - ऽऽ आकि ।।ऽ - ऽऽ -।।ऽ कोय्यो रूपों में), एक पंचकल (ऽ।ऽ), एक चतुष्कल (।।ऽ) । छंद के पैहिलो चरण में ।।ऽ आकि ऽऽ रूपों सें दू चतुष्कल, दू पंचकल (क्रम—ऽ।ऽ - ।ऽऽ) एक चतुष्कल (ऽऽ) आरो एक पंचकल (ऽ।ऽ) के कल-क्रम सें २५ मात्रा होय छै । उदाहरण

बाबा दिलकै हौसुली सहो रे हम्में तेजलां
बलेमू केना तेजब हे छोटी ननदी
हमारो जीया डोलै हे छोटी ननदी

सवासिन छंद में पंचकल के जोन रूपों जोन स्थानों में ऐलों छै ओकरों निर्वाह लय वास्तें जरूरी छै । हेना के दोसरों-तेसरों चरण के आखरी चतुष्कल ऽऽ के रूपों में हुवें पारै छै मतरकि लय के खयाल सें ।।ऽ वाला चतुष्कल होना जरूरी छै । यति पैहिलों चरण में १३-२७ आरो दोसरों-तेसरों चरण में १३ आरो २२

मात्रा पर पड़ै छै ।

लयप्रिया

लयप्रिया वास्तव में हुवे चरण के समछन्द छेकै जेकरों प्रत्येक चरण में २६-२६ मात्रा होय छै । मात्रा के कल आरो भार ई तरह सें होय छै—एक चतुष्कल (।।ऽ आरो ऽऽ), दू पंचकल (।ऽऽ - ।ऽऽ), एक द्विकल (ऽ), एक सप्तकल (।ऽऽऽ) आरो एक त्रिकल (ऽ।) । यति १६ आरो २२ पर पड़ै छै । उदाहरण

घर सें निकललै जे अम्मा हे, गले हीरा के हार
धीरे सें अम्मा चुमइयों हे धिया छै सुकुमार

अंगिका मात्रिक छन्द में संयुक्ताक्षर के पैहिलो अक्षर दीर्घ होय जाय छै । यही सें अम्मा में दू गुरू छै ।

भगवती

मनौन वर्ग के लोकप्रिय छन्द में प्रमुख—भगवती-दंडक आरो द्विपदी समछन्द छेकै, जेकरों प्रत्येक चरण में ४७-४७ मात्रा होय छै । मात्रा रों भार आरो कल-क्रम नीचें उल्लखित ढंग सें होय छै—एक षटकल (।।ऽऽ), दू चतुष्कल (ऽऽ या ।।ऽ रूपों सें), एक षट्कल (।।ऽऽ) दू चतुष्कल (ऽऽ - ऽऽ), एक षट्कल (।।ऽऽ) दू चतुष्कल (ऽऽ - ऽऽ) आरो एक पंचकल (ऽ।ऽ) । उदाहरण

लाले लाले डोलिया हे चढ़ि अइले कलिका हो मैया
घेरें घेरें करै छै पूछार हे
कौनी जे घर हो छेकै अबला भगतिया के
सेहो हमरा दीयो नी बताय हे

पैहिलों चरण में सब्भे रेखांकित अक्षर ह्रस्व रूपों में छै जबें कि 'भगतिया', पद के चारो अक्षर दीर्घ रूपों में ही उचारलों जाय छै । यति १४, २८, ४२ आरो ४७ पर पड़ै छै ।

भैरो

भैरो-कमरथुआ गीत-वर्ग के प्रमुख आरो सर्वाधिक लोकप्रिय छंद छेकै । पंचपदी भैरो छन्द में मात्रा के भार आरो कल यै तरह सें होय छै—पैहलों चरण में दू चतुष्कल(।।।। - ऽऽ), एक त्रिकल (ऽ।), चार चतुष्कल (कोय्यो रूप में) एक पंचकल (ऽ।ऽ) । छंद के दोसरों चरण में छों चतुष्कल (क्रम—ऽऽ), एक त्रिकल (ऽ।), तेसरों चरण में पाँच चतुष्कल (क्रम—ऽऽ) आरो एक पंचकल (।।ऽ।) चौथों

चरण में एक पंचकल (।ऽऽ) एक चतुष्कल (ऽऽ या ।ऽ।), एक त्रिकल (ऽ।), आरो पांचवों चरण में कल आरो मात्रा के भार पैहिले चरण जकां रहै छै ।

जगनथिया हो भाय, दानी के सूरतिया मन में राखियोॅ
कौने मूखे मन्दिर भैया, कौने मुखे किबाड़
कौने मूखे बैठल छथिन दानी सरदार
मैया हो रामेराम
रामे राम हो माय, बाबा के सुरतिया मन में राखियोॅ

● रेखांकित अक्षर लघु रूप में छै ।

अंगमालती

अंगमालती दू चरण वाला विषम मात्रिक वर्ग के छन्द छेकै । एकरों पैहिलों चरण में ३५ मात्रा होय छै जबकि दोसरों चरण में ३० मात्रा होय छै । मात्रा के भार आरो कल पैहलों चरण में आठ चतुष्कल (क्रम–ऽऽ या ।।ऽ) आरो एक त्रिकल (ऽ।) होय छै जबकें दोसरों में एक त्रिकल (ऽ।) छोॅ चतुष्कल (।।ऽ) आरो एक त्रिकल रहै छै । उदाहरण,

गोरे गोरे बहियां गे लिलया कारे शोभो गोदनमा रे जान
जान गोदना रे देखी मोहना तोरों कुभैकौ रे जान ।

● रेखांकित अक्षर के उच्चारण यहां ह्रस्व रूपों में छै ।

पुरबा

पुरबा दू चरण वाला सममात्रिक जाति के छंद छेकै जेकरों प्रत्येक चरण में २४-२४ मात्र होय छै । प्रत्येक चरण के मात्र के भार आरो कल हेना के होय छै–एक चतुष्कल (ऽऽ या ।।ऽ), तीन षट्कल (।।ऽऽ), आरो एक गुरू । उदाहरण,

बाबा जुअबा खेलन तोंय कहां रे गेलौ ना
बाबा जुअवे में कथी तोंयें हारी ऐलौ ना

● रेखांकित अक्षर आपनों ह्रस्व रूपों में यहाँ उपस्थित छै ।

अठोङ्गर

चार चरणवाला ई चौपदी छन्द–विषम मात्रिक जाति के छन्द छेकै, जेकरों पैहिलों-तेसरों आरो दुसरों-चौथों चरण में मात्र के भार आरो कल के समानता मिलै छै। पैहिलों-तेसरों चरण में दू चतुष्कल (कोय्यो रूपोॅ में), एक द्विकल (ऽ), तीन चतुष्कल (कोय्यो रूपोॅ में), एक द्विकल (ऽ) के क्रम सें कुल

मात्रा २४-२४ होय छै आरो यति १०-२४ पर पड़ै छै, जबें दोसरों आरो चौथों चरण में सात चतुष्कल (कोय्यो रूपों में) आरो एक द्विकल (ऽ) सें कुल मात्र ३०-३० के होय छै आरो यति २०-३० पर पड़ै छै । उदाहरण,

धान कें कूटो हे, दुल्हा धान कें कूटों हे
अपनी बहिनी केरों ओखेंरी में, धान कें कूटों हे
कुटबे करबै हे भौजी कुटबे करबै हे
तोरों बहिनी केरों ओखेंरी में धान के कुटबै हे

● रेखांकित अक्षर पढ़ै गावै के क्रम में ह्रस्व होय जाय छै—जेकरे कारण बहुत जग्घा में धान कें बदला में धानक लिखलों मिलै छै ।

विशेष : ऊपर के लोक गीत के टुकड़ा में 'धान कें' के जग्घा में सिर्फ 'धान' मिलै छै तबें वहाँ धान के 'न' कें दीर्घ रूपों में उचारै के परम्परो मिलै छै ।

कण्ठा

व्याह के मौका पर मुक्त कंठ सें गाय जाय वाला के कारने ई कंठा छेकै। मात्रिक जाति के ई दूपदी छन्द में मात्रा के भार आरो कल के समानता मिलै छै। कण्ठा के प्रत्येक चरण में सात चतुष्कल (कोय्यो रूप—।।ऽ या ऽऽ या ऽ।। या ।।।। रूपों में) साथे आखरी में एक गुरू रूप में एक द्विकल मिलै छै । कुल मिलाय कें प्रत्येक चरण में ३०-३० मात्रा साथे यति प्रत्येक चरण में १६ आरो ३० पर पड़ै छै ।

हम मांगलियै गोरा गोरा करका काहे ऐलै रे
भाग बरतिया साला चोट्टा रुपसा गांव घिनैले रे

मुक्ति

छठ-गीत-वर्ग में मुक्ति अति लोकप्रिय छन्द छेकै । आपनों दोनो चरणों में समान मात्रा कें कारणें ई सममात्रिक द्विपदी छन्द छेकै जेकरों प्रत्येक चरण में तीस-तीस मात्रा होय छै आरो जेकरों भार आरो कल यै तरह सें मिलै छै—दू षटकल (।।ऽऽ -।।ऽऽ), एक पंचकल (ऽ।ऽ), एक चतुष्कल (।।ऽ) एक षट्कल (।।ऽऽ) आरो एक त्रिकल (ऽ।) । यति १४ आरो ३० पर पड़ै छै । उदाहरण

केलेवा जे फरल गहौद से वोई पे सुगा मंडराय
मारेंबौ रे सुगबा धनुख से सुग्गा खेंसै मुरुझाय

● मारबौ में 'र' आरो खसै में 'ख' के उच्चारण दीर्घ रूपों में मिलै छै।

पालकी

पालकी चार चरण वाला मात्रिक छन्द छेकै, जेकरों पैहिलों दोसरों आरो चौथों चरण समान भारवाला मात्रा आरो कल के होय छै, यानी ई तीनो चरणों में मात्रा के संख्या २४-२४ होय छै आरो मात्रा के भार-एक चतुष्कल (।।।। या ऽऽ), एक पंचकल (।ऽऽ), दू चतुष्कल, (।ऽ। - ।ऽ।), एक सप्तकल (ऽ।ऽऽ) । यति १३ आरो २४ पर पड़ै छै । छंद के तेसरों चरण में मात्रा के संख्या २१ होय छै आरो कल यै तरह से होय छै—एक चतुष्कल (ऽऽ), एक द्विकल (ऽ), एक चतुष्कल (ऽऽ), एक द्विकल (ऽ), एक चतुष्कल (कोय्यो रूपों में), एक पंचकल (।ऽऽ) । यति १० आरो २१ पर पड़ै छै । उदाहरण,

उबटन के ऐलै बहार, बहार मोरी सखिया
शोभै छै घरवा-दुआर, दुआर मोरी सखिया
सोने के थाली में पीतल हरदिया
गुड़िया छै हमरों तैयार, तैयार मोरी सखिया

● रेखांकित अक्षर आपनों ह्रस्व रूपों में ही ऐलों छै ।

राम

'रम्भा' आकि 'रामा' से शुरू होय वाला ई छन्द एकपदी जाति के मात्रिक छन्द छेकै, जेकरा में २४ मात्रा निम्नांकित ढंगों सें उपस्थित रहै छै—एक चतुष्कल (ऽऽ), तीन षटकल (।।ऽऽ, ।।ऽऽ, ।।ऽऽ), एक द्विकल (ऽ) । उदाहरण,

रामा बाँधी देलकै ललकी लगनिया रे ना

● रेखांकित अक्षर ह्रस्व रूपों में छै ।

अयभाती

झूमर लोकगीत वर्ग के नामी छन्दों में अयभाती एक विषम मात्रिक दू पदी छन्द छेकै । एकरों २५ मात्रा वाला पैहलों चरण में कल आरो मात्रा-भार ई ढंग सें होय छै—एक चतुष्कल (।।ऽ या ऽऽ), तीन पंचकल (।।।ऽ, ।।।ऽ, ।।।ऽ), एक षटकल (।ऽ।ऽ) । यति ६, १६, आरो २६ पर होय छै, जबेंकि दोसरों चरण में कल-मात्रा-भार के व्यवस्था हेना कें रहै छै—एक सप्तकल (ऽ।ऽऽ या ऽ।।।ऽ) एक पंचकल (।।।ऽ - ।ऽऽ), एक षटकल (।।ऽऽ) । यति १२ आरो १८ पर पड़ै छै । उदाहरण,

लहकै पुरवैया, कि लहकै बदरिया, कि रही-रही
मारै कनखी बिजुरिया, कि रही-रही ।

(डॉ. समीर)

वैरागी

विरागी स्वभाव के वैरागी एकपदी मात्रिक छन्द छेकै, जैमें ३१ मात्रा होय छै । मात्रा-भार-कल-व्यवस्था यै तरह सें रहै छै—एक षटकल (।।ऽऽ), दो चतुष्कल (।।ऽ या ऽऽ रूपों सें), एक पंचकल (।।।ऽ), एक चतुष्कल (ऽऽ), एक पंचकल (ऽ।ऽ), एक त्रिकल (।ऽ)। यति १० आरो ३१ मात्रा पर पड़ै छै । उदाहरण,

उकिया हो रामा, धोबी बकसवा पकड़ें चाहलें रे की ।

● रेखांकित अक्षर ह्रस्व रूपों में छै ।

मंदार

मंदार विषम मात्रिक द्विपदी छन्द छेकै । ई छन्द के पैहिलों चरण में विभिन्न कल आरो मात्रा-भार के क्रम हेना के होय छै—एक षट्कल (ऽ।ऽ।), दू चतुष्कल (ऽऽ - ऽऽ), एक पंचकल (।।ऽ।), एक चतुष्कल (ऽऽ), एक द्विकल (ऽ) एक षट्कल (।।ऽऽ), एक चतुष्कल (।।ऽ या ऽऽ) । यति १४ आरो ३५ पर होय छै । ऐकरों दुसरों चरण में कल के प्रकार आरो मात्रा-भार-क्रम हेना कें होय छै—एक षटकल (ऽ।ऽ।) दू चतुष्कल (।।ऽ या ऽऽ), एक द्विकल (ऽ), एक षट्कल (।।ऽऽ) एक चतुष्कल (ऽऽ या ।।ऽ)

साग पात खोटी-खोटी, दिनमा गमैवै हे मिथिलै में रहवै
आबें दुक्ख सहलों नै जाए, मिथिलै में रहबै ।

● पैहिलों चरण में एक षट्कल के बाद चतुष्कल के क्रम ऽऽ के जग्घा में ।।ऽ भी हुवें पारै छै ।

● रेखांकित अक्षर ह्रस्व रूपों में छै ।

वसन्त

होली गीत वर्ग के नामी छन्दों में वसन्त के स्थान अति लोकप्रिय छै । चार चरण वाला ई चतुष्पदी छन्द में मात्रा के संख्यौ अलग-अलग हुवै छै । एकरों पैहिलों चरण में मात्रा-भार-क्रम आरो कल हेना कें होय छै—एक चतुष्कल (ऽऽ), एक द्विकल (ऽ), एक चतुष्कल (ऽऽ), एक द्विकल (ऽ), दू पंचकल (क्रम—।।ऽ। - ।ऽऽ), एक चतुष्कल (ऽऽ), एक द्विकल (ऽ) । छन्द के दुसरों चरण में कल आरो मात्रा-भार के क्रम यै तरह सें होय छै—एक अष्टकल (कोय रूपों में), एक त्रिकल (ऽ।), एक पंचकल (।ऽऽ), एक अष्टकल (कोय रूपों में), एक चतुष्कल (।।ऽ या ऽऽ) । एकरों तेसरों चरण में कल आरो मात्रा के भार हेना कें होय छै—एक

अष्टकल (सामन्यतः एक षटकल, एक द्विकल के योग सें) एक त्रिकल (ऽ।), एक पंचकल (।ऽऽ), दू चतुष्कल (।।।। या ।।ऽ या ऽऽ रूपों सें) आरो एक त्रिकल (ऽ।) । चौथों चरण में एक पंचकल (।ऽऽ) आरो एक षट्कल (ऽऽऽ) होय छै ।

फूलों सें फलों सें, हे देवी भवानी फूलों सें
दखिन-दिशा नै जैयो बलुमआ दखिन दिशा बड़ भारी
बाघ-सींघ तोरा खय जैथौं हम धनि रहबों दुखारी
भवानी फूलों सें

● रेखांकित अक्षर ह्रस्व रूपों में छै । यति पैहिलोॅ चरण में छों मात्रा (एक चतुष्कल, एक द्विकल) के बाद पड़ै छै ।

कष्टहरणी

मात्रिक जाति के कष्टहरणी दू पदी छन्द छेकै, जेकरोॅ पैहिलों चरण में मात्रा के संख्या ४२ होय छै । मात्र के भार-क्रम एकरों पहलों चरण में निम्नांकित 'कल' में विभाजित रहै छै—एक सप्तकल (ऽ।ऽऽ या ऽ।ऽ।।), एक पंचकल (ऽ।ऽ), एक अष्टकल (।ऽ।ऽ।।), एक चतुष्कल (ऽऽ या ।।।।), एक सप्तकल (ऽ।ऽ।।), एक चतुष्कल (ऽऽ या ।।।।), (एक सप्तकल (ऽ।ऽ।।) ।

छन्द के दोसरों चरण में छोॅ चतुष्कल (कोय्यो रूपों में), एक पंचकल (ऽ।ऽ) साथें २९ मात्रा होय छै । यति पैहलों चरण में २०, ३१, आरो ४२ पर पड़ै छै, जबेंकि दोसरा चरण में १२ आरो २९ पर पड़ै छै । उदाहरण,

सब्भे माय के हाथ में गुलाब के छड़ी, चम्पा फूल के छड़ी
अड़हुल फूल के छड़ी
भैया दीहौ नी आशिषबा घरबा जाऊँगी चली

पियावासा

सम मात्रिक जाति के दूपदी छन्द-पियावासा रों प्रत्येक चरण में कुल २६-२६ मात्रा होय छै । एक चरण में मात्रा के भार के क्रम—एक चतुष्कल (।।ऽ या ऽऽ), एक पंचकल (।ऽऽ), एक चतुष्कल (।ऽ।), तीन पंचकल (।ऽऽ - ।ऽऽ - ।ऽऽ) रहै छै । यति प्रत्येक चरण में १३ आरो २८ पर पड़ै छै । उदाहरण,

साली सरोजों के पास, गभरुआ कें जावें नै देवै
सात समुन्दरों के पार गभरुआ कें जावें नै देवै

● रेखांकित अक्षर आपनों ह्रस्व रूपो में छै ।

● उदाहरण में (संस्कृत छन्द-विवेचन के अनुसार) 'समन्दरों' में 'न्द' संयुक्ताक्षर

ही गुरू छै, जबेॅ कि प्राकृत के अनुसार संयुताक्षर के पूर्व अक्षर 'म' गुरू होतै ।

कोशी

कोशी मात्रिक जाति में दंडक वर्ग के एकपदी छन्द छेकै, जेकरा में कुल मात्रा ४८ रहै छै । मात्रा के भार-क्रम आरो कल यै तरह सें होय छै—दू पंचकल (।ऽऽ -।ऽऽ), चार चतुष्कल (क्रम—ऽऽ -।ऽ -।ऽ -।ऽ), दू पंचकल (।ऽऽ -।ऽऽ), दू चतुष्कल (क्रम—।ऽ या ऽऽ), एक पंचकल (ऽ।ऽ), दू चतुष्कल (।ऽ-।ऽ), एक पंचकल (ऽ।ऽ), एक त्रिकल (।ऽ) ।

यति-विधान के कारणें ई द्विपदी छन्दो मानलों जावें सकें छै । तबें कल हेना कें होतै—पैहिलों चरण में—दू पंचकल, चार चतुष्कल, दोसरोॅ चरण में दू पंचकल, एक चतुष्कल, एक पंचकल, एक त्रिकल । स्मरण राखना चाहियों कि द्विपदी होल्हौ पर मात्रा के भार आरो कल के क्रम में कोय अन्तर नै ऐतै । उदाहरण,

पहुँची गईलै जाके जमुना गढ़ नगरिया हो
जोगी के सुरतिया जमुनी देखै लें रे की

● यहाँ रेखांकित अक्षर सिनी में 'हुँ' गुरू रूप में आरो 'ना' 'खै' 'रे' लघु रूप में ऐलों छै ।

गंगा

गंगा विषम मात्रिक जाति के द्विपदी छन्द छेकै, जेकरों पैहिलों चरण में एक षटकल (ऽ।ऽ।), सात चतुष्कल (क्रम—ऽऽ - ऽऽ -।।।। -।।।। - ऽऽ - ऽऽ -।ऽ -।ऽ), एक त्रिकल (ऽ।) ।

जबेंकि दोसरों दुसरों चरण में मात्रा के भार आरो कल के क्रम यै तरह सें होय छै—एक पंचकल (ऽ।ऽ), तीन षटकल (क्रम—।ऽ।ऽ, ।ऽ।ऽ, ।ऽ।ऽ), दू चतुष्कल (क्रम—।ऽ -।ऽ), एक त्रिकल (ऽ।) । उदाहरण,

आस-बाट देखी-दाखी डगमग डोलै आबें डोलै मन मस्तूल
सैंया बिनु जग अजवारी लागै दैवा हो रही, रही मारै छै हूल ।

शीतलामृत

शीतलामृत-अंगिका के मनौन वर्ग के गीतों के लोकप्रिय छन्द छेकै । विषम मात्रिक वर्ग के ई छन्दों के दुन्हू चरणों में मात्रासिनी क्रमशः १८ आरो १४ होय छै । एकरों पैहिलों चरण में कल आरो मात्रा के भार यै तरह सें होय छै—तीन

चतुष्कल (क्रम—।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ) आरो एक षटकल (क्रम—।।ऽऽ), जबें कि दोसरों चरण में दू चतुष्कल (।।ऽ -।।ऽ) आरो एक षटकल (।।ऽऽ) होय छै । उदाहरण,

गलियाँ-गलियाँ घूमै छै शीतल मैय्यो
कोय नै जागै छै आधी रतिया हे

● रेखांकित अक्षर के उच्चारण ह्रस्व रूपों में ऐलों छै ।

अंगधात्री

मनौन वर्ग के गीत के अति लोकप्रिय छन्द में अंगधात्री प्रमुख छै। अंग जनपद के कुल देवी 'अंगधात्री' के उपासना में गावै जाय वाला ई छन्दों में दू चरण होय छै आरो दोनों चरणों में मात्रसाभार आरो कल के समानता होला के कारण ई समपदी छन्द छेकै । एक चरण में कल के क्रम हेना कें होय छै—एक षटकल (।।ऽऽ), चार चतुष्कल (क्रम—।।ऽ, ।।।।, ।।ऽ, ऽऽ) आरो एक त्रिकल (ऽ।) । उदाहरण,

कथी केरों अँग ही रे कँगही कथी केरों हे काम
मचिया बैठली अंगधात्रि माय झाड़ै लामी रे केश

● रेखांकित अक्षर ह्रस्व रूपों में ऐलों छै ।

● 'अ' 'क' में ' ं ' के गिनती नै छै ।

विशेष : प्राकृत छन्द में दू लघु मिली कें जगह-जगह पर एक गुरू के रूप भी लै लै छै, जेना कि कै जग्घा पर गुरू रूपों में एक अक्षर होला के बादो ऊ आपनों स्वरूप में ऊ दू लघु जकां ही रहै छै ।

(संशोधित आरो सरलीकृत 'छन्द-मौनी' सें साभार)

■■